Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 142 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शुक्रवार 22 नवम्बर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

धर्म ही ऐसा है जो दुख को भुलाकर सुख का अनुभव कराता है।

It is only religion or righteousness that causingh to forget sorrow, makes us to experience virtual bliss.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

पाकिस्तानी आतंकियों की घुसपैठ मामले में जम्मू के कई इलाकों में एनआईए की छापेमारी

जम्मू (आरएनएस)। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने गुरुवार सुबह जम्मू के कई इलाकों पर रेड डाली। यह छापे एक नए दर्ज मामले से संबंधित हैं, जिसमें पाकिस्तान से आतंकवादियों की घुसपैठ का आरोप लगाया गया है। जानकारी के अनुसार एनआईए की इस छापेमारी का मकसद पाकिस्तानी आतंकियों के भारत में घुसने के प्रयासों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी जुटाना है। सूत्रों ने बताया कि पुलिस और अर्धसैनिक बल सीआरपीएफ की मदद से एनआईए के अधिकारी कई स्थानों पर छापेमारी कर रहे हैं। एनआईए की ये छापेमारी जम्मू के इलाकों में हो रही है।

गुजरात और उत्तर प्रदेश में भी 'साबरमती रिपोर्ट' टैक्स फ्री

मुंबई (आरएनएस)। 2002 में गोधरा ट्रेन अग्निकांड पर आधारित हिंदी फिल्म द साबरमती रिपोर्ट को गुजरात और उत्तर प्रदेश में टैक्स फ्री कर दिया गया है। हाल ही में रिलीज हुई विक्रांत मैसी अभिनीत फिल्म 'द साबरमती रिपोर्ट' को दर्शकों का बेहद प्यार मिल रहा है। फिल्म में गोधरा ट्रेन अग्निकांड की सच्चाई और तथ्यों को उजागर करने का दावा किया गया है। इसे दर्शकों से काफी सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है। फिल्म को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह समेत राजनीतिक नेताओं का भी समर्थन मिला है।

वित्त मंत्री ने सुशासन पर आयोजित क्षेत्रीय सम्मेलन का किया शुभारंभ

विकास के लिए महत्वपूर्ण कारक है सुशासन : ओ.पी. चौधरी

- देशभर में हो रहे नवाचारों, बेस्ट प्रेक्टिसेस और जनोन्मुखी कार्यों पर सम्मेलन में हो रहा विमर्श
- केन्द्रीय कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय तथा राज्य शासन के सुशासन एवं अभिसरण विभाग द्वारा नवा रायपुर में दो दिवसीय क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। सुशासन विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। इससे न केवल देश का सुव्यवस्थित विकास होता है, बल्कि यह नागरिकों के जीवन को भी बेहतर बनाता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर प्रारंभ हुए स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन, जीएसटी, जैम पोर्टल, डिजिटल इनक्लुजन जैसे नवाचारों ने देश में बड़ा बदलाव लाया है। वित्त मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी ने आज नवा रायपुर में केन्द्रीय कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय के प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग तथा छत्तीसगढ़ शासन के सुशासन एवं अभिसरण विभाग द्वारा सुशासन पर आयोजित क्षेत्रीय सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए ये विचार व्यक्त किए। छत्तीसगढ़ सहित देशभर से आए भारतीय प्रशासनिक सेवा और केन्द्रीय कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय के अधिकारी सम्मेलन में सुशासन के लिए किए जा रहे नवाचारों, बेस्ट प्रेक्टिसेस और जनोन्मुखी कार्यों पर विमर्श कर रहे हैं।

नागरिक केंद्रित सुशासन पर आयोजित दो दिवसीय क्षेत्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए वित्त मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी ने कहा कि वर्ष 2047 तक भारत को 55 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में ब्यूरोक्रेट्स की महत्वपूर्ण होगी। उन्होंने सम्मेलन में भागीदारी कर रहे विभिन्न राज्यों के भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों से कहा कि सुशासन, नवाचार और बदलाव के लिए खुद को ट्रांसफॉर्म करना होगा, ताकि आप लोगों की प्रतिभा और व्यक्तित्व में क्षरण न हो। समय के साथ स्वयं को बदलने वाले ही प्रासंगिक रहेंगे। श्री चौधरी ने कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था तेज़ी से बढ़ रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और सुशासन से वर्ष 2047 तक 55 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के साथ भारत दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरेगी।

वित्त मंत्री श्री चौधरी ने सम्मेलन में कहा कि कई कलेक्टर और अधिकारी प्रभावी नवाचार कर रहे हैं। समय और अपने क्षेत्र की जरूरतों के अनुरूप बेहतर नागरिक सेवाएं डिलीवर कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज सभी अधिकारियों को अपने कार्यक्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करने की जरूरत है, तभी कल्याणकारी पहलों को नागरिकों तक प्रभावी तरीके से पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था में छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ के प्रति नजरिया तेजी से बदलेगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि सम्मेलन में दो दिनों तक होने वाले नवाचारों, बेस्ट प्रेक्टिसेस और सुशासन के कार्यों की चर्चा से राज्य के अधिकारी भी प्रेरित होंगे और उन्हें यहां लागू करने की पहल करेंगे।

मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन ने सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि सुशासन की सफलता तभी है जब हम जिनके लिए काम कर रहे हैं, उनके चेहरों पर मुस्कान ला पाएं। -शेष पेज 5 पर

आज समापन

क्षेत्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन 22 नवम्बर को सवेरे 10 बजे, चौथा सत्र 'छत्तीसगढ़ सरकार की सर्वोत्तम प्रथाएं' (बेस्ट प्रेक्टिसेस) विषय पर आयोजित किया जाएगा। इस सत्र की अध्यक्षता वाणिज्य एवं उद्योग विभाग के सचिव श्री रजत कुमार करेंगे। पूर्वाह्न 11.30 बजे ''जिलों के समग्र विकास में संतृप्ति दृष्टिकोण'' (सेच्युरेशन एप्रोच इन होलिस्टिक डेव्हलपमेंट ऑफ डिस्ट्रिक्ट्स) विषय पर पांचवा सत्र आयोजित किया जाएगा। जिसकी अध्यक्षता आवास एवं पर्यावरण विभाग के सचिव श्री अंकित आनंद करेंगे। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय और भारत सरकार के कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय के राज्य मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह दोपहर 2 बजे से आयोजित इस क्षेत्रीय सम्मेलन के समापन सत्र में शामिल होंगे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को डोमिनिका के सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित किया गया

पीएम मोदी बोले- यह सम्मान 140 करोड़ भारतीयों को समर्पित

नई दिल्ली (आरएनएस)। डोमिनिका ने कोविड-19 महामारी के दौरान केरेबियाई राष्ट्र को दी गई मदद में भारत के योगदान और दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय साझेदारी बढ़ाने के उनके समर्पण के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देश के सर्वोच्च पुरस्कार डोमिनिका अवार्ड ऑफ ऑनर से सम्मानित किया। डोमिनिका की राष्ट्रपति सिलवेनी बर्टन ने प्रधानमंत्री मोदी को इस सम्मान से सम्मानित किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस सम्मान को भारत के लोगों को समर्पित किया। पीएम मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा, डोमिनिका द्वारा सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित होने पर सम्मानित महसूस कर रहा हूं। मैं इसे भारत के 140 करोड़ लोगों को समर्पित करता हूं। डोमिनिका के सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित होने के बाद पीएम मोदी ने कहा, मैं डोमिनिका के सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित किए जाने पर राष्ट्रपति सिल्वेनी बर्टन, प्रधानमंत्री रूजवेल्ट स्केरिट और डोमिनिका के लोगों का आभार व्यक्त करता हूं। यह सम्मान केवल मेरा नहीं बल्कि भारत के 140 करोड़ लोगों का, उनके संस्कार और उनकी परंपरा का है। भारत और डोमिनिका दो लोकतंत्र हैं। हम दोनों पूरी दुनिया के लिए महिला सशक्तिकरण के रोल मॉडल हैं। दोनों ही देशों में महिला राष्ट्रपति हैं। उन्होंने कहा कि भारत के लिए यह गहरे संतोष का विषय रहा है कि हम कोरोना वायरस (कोविड-19) महामारी के समय डोमिनिका के लोगों की मदद कर सके। विदेश मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा, यह पुरस्कार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और कोविड-19 महामारी के दौरान डोमिनिका को दी गई मदद के साथ ही भारत-डोमिनिका संबंधों को मजबूत करने की उनकी प्रतिबद्धता के लिए है।

प्रधानमंत्री मोदी को गयाना के सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार 'द ऑर्डर ऑफ एक्सीलेंस' से सम्मानित किया गया

नई दिल्ली (पीआईबी)। गयाना के राष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद इरफान अली ने आज स्टेट हाउस में आयोजित एक समारोह में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को देश के सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार 'द ऑर्डर ऑफ एक्सीलेंस' से सम्मानित किया। एक दूरदर्शी राजनेता के रूप में वैश्विक मंच पर विकासशील देशों के अधिकारों की रक्षा करने, वैश्विक समुदाय के लिए असाधारण सेवा करने तथा भारत-गयाना संबंधों को मजबूत करने की प्रतिबद्धता के लिए श्री मोदी को यह सम्मान प्रदान किया गया है। पुरस्कार ग्रहण करते हुए प्रधानमंत्री ने इस सम्मान को भारत के नागरिकों तथा दोनों देशों के लोगों के बीच गहरे ऐतिहासिक संबंधों को समर्पित किया। उन्होंने कहा कि उनकी यह राजकीय यात्रा भारत-गयाना मैत्री को और सुदृढ़ करने की दिशा में भारत की निरंतर प्रतिबद्धता का प्रमाण है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी गयाना के सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित होने वाले केवल चौथे विदेशी नेता हैं।

गौ संरक्षण की दिशा में सामाजिक संगठन कर रहे हैं पहल, तेंदुआ के गौशाला का किया अवलोकन

आरंग (विश्व परिवार)। गुरुवार को नगर के स्वयंसेवी सामाजिक संगठन पीपला वेलफेयर फाउंडेशन व श्री बागेश्वरनाथ गौ सेवा धाम के प्रतिनिधि मंडल ने तेंदुआ नया रायपुर के गौशाला का अवलोकन कर गौ शाला संचालन संबंधी विस्तृत जानकारी लिए। जिसमें बीमार पशु चिकित्सा उपकरण, गौ एम्बुलेंस, दुर्घटना ग्रस्त, गौवंश एवं अन्य गौ वंशों की देखभाल संबंधी जानकारी शामिल है।जिससे कि आरंग के भी गौवंशो को सुरक्षित, संरक्षित किया जा सके। ज्ञात हो कि नगर के सामाजिक संगठनों के सदस्यगण प्रतिदिन घुमरा भांठा स्थित गौठान में पहुंचकर नगर पालिका के कर्मचारियों के साथ मिलकर गौ वंशो को चारा पानी देने, बीमार गायों की देखभाल व उपचार करने तथा गौठान की साफ सफाई में सहभागिता निभा रहे हैं। साथ ही नगर के गौ वंशो के संरक्षण संवर्धन के लिए पहल कर रहे हैं। प्रतिनिधि मंडल में राहुल जोशी, दूजेराम धीवर, कोमल लाखोटी, जी एस यादव, रमेश देवांगन ने गौशाला पहुंचकर अवलोकन किया।

सड़क, पानी, बिजली, सफाई व्यवस्था देखने के लिए टीम के साथ आयुक्त निकले दौरे पर

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र में हो रहे प्रमुख कार्य सड़क, पानी, उद्यान, निर्माण, बिजली, सफाई व्यवस्था देखने के लिए आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय सुबह 7:30 बजे पहुंचे। जोन क्रमांक 02 वैशाली नगर में विभिन्न जनकल्याणकारी कार्य संपादित किये जा रहे है। सभी कार्यो का अवलोकन करने के लिए आयुक्त वैशाली नगर जोन के विभिन्न वार्डो में भ्रमण किये। जिसमें सफाई व्यवस्था, पानी सप्लाई, बिजली व्यवस्था, निर्माण क्षेत्र में हो रहे कार्यो की प्रगति का अवलोकन किया। जोन आयुक्त येशा लहरे से संबंधित सभी जानकारी प्राप्त किये। सभी कार्य समय अवधि में गुणवत्तापूर्वक पूर्ण हो यही प्राथमिकता होगी।

कुरूद क्षेत्र में स्थित चंदूलाल चंद्राकर मेडिकल कालेज का पहुंच मार्ग को सीमेंटीकरण करने का प्रस्ताव जोन आयुक्त द्वारा रखा गया। उनके द्वारा बताया गया कि यह बहुत महत्वपूर्ण मार्ग है। मेडिकल कालेज में प्रतिदिन लगभग 200 से अधिक ओपीडी चलता है, बहुत सारे लोग ईलाज कराने जाते है। बहुत सारे गंभीर बिमारी से पीड़ित मरीज इस सड़क से गुजरते है, यह सड़क बारीश के समय बहुत जर्जर हो गया था, आने-जाने वाले लोगो को बहुत तकलीफ होती थी। इसलिए उसे डब्लू बी.एम. रोड बनाकर सुधार किया गया। अब वहां पर सी.सी. रोड निर्माण कर देने से सभी के लिए सुविधाजनक होगा, जो कचांदुर मार्ग लगभग 2300 मीटर का होगा। आयुक्त ने उसका प्रस्ताव बनाने को कहा, जो भी आवश्यक कार्य है उसे पूर्ण किया जाएगा। सफाई संबंधित व्यवस्था में एस.एल.आर.एम. सेंटर, ट्रेंचिंग ग्राउण्ड, उद्यान, तालाब, पानी सप्लाई व्यवस्था आदि का वार्डो में जाकर निरीक्षण किये, आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिये।

सार्वजनिक नल से बस्ती के लोग पानी भर रहे थे, जहां पर अनावश्यक पानी गिर रहा था। पुछने पे पता चला नल की टोटी कोई तोड़ दिया है, जिससे खराब हो गया। ऐसे जगहो सभी जगहो पर नल की टोटी लगाने को कहा। सभी यह ध्यान देगें कि कही पर भी पानी अनावश्यक बर्बाद न हो। अगर कोई टोटी तोड़े तो उसके खिलाफ कार्यवाही भी की जाए, सबके सहयोग से ही हम बेहतर सुविधा बना सकते है।

70 प्लस वृद्धजनों के लिए 5 लाख रुपये तक के आयुष्मान कार्ड पर निःशुल्क ईलाज की सुविधा

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। केन्द्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओ में से एक महत्वपूर्ण योजना आयुष्मान कार्ड सभी परिवार के लिए बन रहा है। जिसमें सामान्य वर्ग के परिवार के लोग 50 हजार रूपये तक का ईलाज शासन द्वारा निर्धारित बड़े अस्पतालों में निःशुल्क करवा सकते है। बीपीएल श्रेणी निवासरत परिवार 5 लाख रूपये तक का आयुष्मान कार्ड पर फ्री में ईलाज करवा सकते है। अभी केन्द्र सरकार द्वारा मान. प्रधानमंत्री जी द्वारा घोषणा के बाद सभी वर्ग के परिवार के लिए 70 वर्ष से अधिक उम्र के वृद्धजनों के लिए आयुष्मान कार्ड बनाया जा रहा है।

नेहरू नगर वेस्ट सियान सदन में आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय स्वयं जाकर वृद्धजनो के आयुष्मान कार्ड बनाने हेतु प्रेरित किये। वहां पर आयुष्मान कार्ड बनाया जा रहा है, अभी तक सैकड़ो लोगो ने आयुष्मान कार्ड बनवा लिया। कोई भी 70 वर्षिय महिला/पुरूष अपना आधार कार्ड ले जाकर बनवा सकते है। शिविर जारी है, इसी प्रकार का शिविर अन्य जोन में वार्ड पार्षदगणो से संपर्क करके लगाया जाएगा। वैशालीनगर विधायक रिकेश सेन, महापौर नीरज पाल ने सभी 70 प्लस के महिला/ पुरूष वृद्धजनो से निवेदन किया है, कि यह योजना केन्द्र सरकार द्वारा वृद्धो के लिए ईलाज में हो रहे तकलीफ को देखते हुए मान. प्रधानमंत्री जी द्वारा लाया गया है। नगर निगम भिलाई क्षेत्र में लगभग 26 हजार 70 प्लस के वृद्धजन निवासरत है।

अखिल भारतीय सम्मेलन, देश में शांति एवं न्याय पूर्ण समाज की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध जमात-ए-इस्लामी हिंद

रायपुर (विश्व परिवार)। संस्था के छत्तीसगढ़ प्रदेश के मीडिया सचिव अब्दुल वाहिद सिद्दीकी ने हैदराबाद में हुए इज्तेमा की जानकारी देते हुए बताया कि इस इज्तेमा का केन्द्रीय विषय अदल व किश्त था, जिसका उद्देश्य लोगों को यह बताना था कि समाज में इंसाफ के साथ न्याय कैसे किया जा सकता है ! इस्लाम के द्वितीय खलीफा हजरत उमर इंसानों के साथ साथ जानवरों के अधिकारों के लिए भी बहुत फिक्रमंद रहते थे, वह कहा करते थे कि मुझे डर है कि अगर दरिया ए नील के किनारे कोई जानवर भी प्यास से मर गया तो ईश्वर के यहां मैं क्या जवाब दूंगा।

देश में धार्मिक सद्भाव बना रहे, देश के सभी धर्म के लोग प्यार मुहब्बत से रहें इसके लिए जरूरी है कि भारत के संविधान का पालन किया जाए सभी धर्मो के लोगों को चाहिए कि भारतीय संविधान में दिए गए अधिकारों का सम्मान करें जमात-ए-इस्लामी. हिंद ने शांति व न्यायपूर्ण समाज की स्थापना के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए सदस्यों से इसे और मजबूत करने का आह्वान किया है। 15-17 नवंबर तक हैदराबाद में आयोजित जमात-ए- इस्लामी हिंद के अखिल भारतीय सदस्य सम्मेलन में कई महत्वपूर्ण राष्ट्रीय सामुदायिक मुद्दों पर प्रस्ताव पारित किया गया। प्रस्ताव में जमात-ए-इस्लामी हिंद ने इस बात पर चिंता जताई कि सांप्रदायिक ताकतों के लगातार उकसावे ने भारत के मुसलमानों के लिए स्थिति को और अधिक जटिल बना दिया है। उनके संस्थानों, इबादतगाहों, संपत्तियों नए वक्फ बिल को पूरी तरह खारिज किया। प्रस्ताव में जमात-ए-इस्लामी हिंद ने कहा कि यह सम्मेलन नए वक्फ बिल को पूरी तरह खारिज करता है। यह एक स्वागत योग्य पहलू है कि मुसलमानों ने वक्फ बिल की खामियों और उससे होने वाले बड़े नुकसान को जनता के सामने स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) छुरा जिला गरियाबंद (छत्तीसगढ़)

-: ईश्तहार :-

क्रमांक/151/वाचक/2024
छुरा दिनांक 20.11.2024

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक **खेमलाल सिन्हा** प्रस्तावित लोक न्यासीगण **ग्राम खड़मा जिला गरियाबंद** के द्वारा महादेव मंदिर **ग्राम खड़मा वि. ख. छुरा जिला गरियाबंद के ट्रस्ट कमेटी (लोक न्यास)** के पंजीयन हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है। आवेदन के साथ न्यासियों के नाम व भूमि की जानकारी संलग्न किया गया है।

उपरोक्त आवेदन पर आपत्ति **दिनांक 02/12/2024** तक इस न्यायालय में कार्यालयीन समय पर स्वयं अथवा अपने अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित समयावधि के पश्चात प्रस्तुत दावा आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

अनुविभागीय अधिकारी
(रा.) छुरा

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

नया मुख्यालय भवन गांधी चौक, रायपुर फोन नं. 2535780, 90,
फैक्स : 0771 -2227395,
E-mail ID - electrical.rmc@gmail.com

निविदा आमंत्रण सूचना

क्रमांक / 311/विद्युत/न.पा.नि./2024 **दि. 21/11/2024**

नगर पालिक निगम, रायपुर, विद्युत द्वारा निम्नांकित कार्य हेतु लो. नि. वि. एकल खिड़की प्रणाली में पंजीकृत ब वर्ग विद्युत ठेकेदारों/फर्मो से मुहरबंद निविदायें दो लिफाफा पद्धति के माध्यम से स्पीड पोस्ट से दिनांक 12/12/2024 को संध्या 4:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है, प्राप्त सभी निविदायें उपस्थित निविदाकारों अथवा उनके अधिकृत प्रतिनिधियों के सम्मुख दिनांक 12/12/2024 को संध्या 05:00 बजे खोली जाएगी। इस कार्य हेतु निविदा प्रपत्र - अ निर्धारित राशि रू. 750.00 तक कर दिनांक 11/12/2024 तक नगर पालिका निगम, विद्युत विभाग, मुख्यालय से कार्यालयीन समय में प्राप्त की जा सकती है। कार्य का विवरण :- प्रधानमंत्री आवास योजनातर्गत लाभांडी 232 नग आवासीय परिसर में बाह्य विद्युतीकरण कार्य बाबत्। अनुमानित लागत राशि रू. 11,04,000.00, अमानती राशि रू. 11040.00।

नोट :-

1. निविदा प्रपत्र के लिये आवेदन के साथ सक्षम श्रेणी में पंजीकृत वैद्य जीवित पंजीयन एवं विद्युत अनुज्ञा प्रपत्र देना होगा।
2 निविदा के अन्य नियम एवं शर्ते निविदा प्रपत्र के साथ दे दी जायेगी।

कार्यापालन अभियंता (विद्युत)
नगर पालिका निगम, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223

Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि दीनदयाल आवास योजनांतर्गत परसुलीडीह रायपुर, में स्थित भवन क्रमांक **एल.आई.जी.-102, श्री सुबोध कुमार साहू पिता श्री मेघनाथ साहू,** के नाम से स्ववित्तीय आधार पर आबंटित है। आबंटी द्वारा उक्त भवन की लीजडीड दिनांक 24.**11.2011 को पंजीकृत कराने के उपरांत पूर्ण मूल्य जमा कर इस कार्यालय के पत्र क्रमांक** 9440 **दिनांक** 07.08.2015 के माध्यम से आत्यिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया गया है। वर्तमान में आबंटी **श्री सुबोध कुमार साहू पिता श्री मेघनाथ साहू, निवासी - 2/1921, छोटा भवानी नगर हनुमान मंदिर के पास कोटा, तससील व जिला रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा उक्त भवन को **श्रीमती रूबी पति श्री चंद्रदीप निवासी - प्लाट नं. 28, वार्ड नं. 19 हर्षित विहार कॉलोनी, उरकुरा, तहसील व जिला रायपुर (छ.ग.)** को विक्रय करने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त भवन के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्धशासकीय संस्था, कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधेहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)

शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./15695/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 20-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15695
वार्ड का नाम-34- लाल बहादुर शास्त्री वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **34** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR333A0367A** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SAHIDA ALAM** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O LT. JAHANGIR ALAM** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **नूर - ए- नबी मस्जिद द्वारा - ओबैद शेख** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता - गफ्फार** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)

शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./15717/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 20-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15717
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **30** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR332A00178** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ASHISH S HORA** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O LATE NINDER SINGH HORA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री पंकज कुमार सिंह** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता - श्री महेन्द्र सिंह** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)

शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./15718/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 20-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15718
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **30** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR331G00125** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ASHOK KUMAR, KISHOR KUMAR, S/O LATE. DHANRAJ BHUTDA** पिता/पति श्री/श्रीमती **....** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री अशोक कुमार भूतड़ा** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता - स्व. श्री धर्मराज भूतड़ा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)

शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./15748/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 20-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15748
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **30** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR331E0291A** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SMT. KUSUM NATTHANI** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O PRABHU DAS NATTHANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती सीमा मोहन बेल्लरवार** पिता/पति श्री/श्रीमती **पति - श्री मोहन बेल्लरवार** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)

शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./15749/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 20-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15749
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **30** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR331A00315** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SMT. NEETA SARAIYA W/O LATE SHIV KUMAR SARAIYA, AVNEESH ANEESH S/O SHIV KUMAR SARAIYA S/O G.B. SARAIYA** पिता/पति श्री/श्रीमती **....** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्री गुमान प्रजापति - पिता श्री बजरंग लाल प्रजापति** पिता/पति श्री/श्रीमती **2. श्रीमती प्रीति प्रजापति - पति श्री गुमान प्रजापति** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)

शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./15823/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 21-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15823
वार्ड का नाम- 28- शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **28** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR235I00115** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **KULDEEP SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O RAM SHAKAL THAKUR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री रविभूषण सिंह** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता- स्व. श्री कुलदीप सिंह** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)

शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./15790/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 21-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15790
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **27** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR220I00013** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **ALI AKBAR BHATTIWALA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O A. ALI BHATTALWALA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्रीमती अलफिया फातमी पति श्री मुस्तफा फातमी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **2 श्रीमती सविता सिंग पति श्री विनोद सिंग** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)

आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./15734/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 21-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15734
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652A00202** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MD HABIBULLAH HALDER** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MD MONIR AHMED** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHAMSHAD BEGUM** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O MOHAMMAD RIYAJUDDIN KHOKHAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)

आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./15704/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 21-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15704
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652D0118A** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SHAHEDA QURAISHI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. JAMIL AHMED** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHAHIN PARWIN** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O SHEIKH KAREEM** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)

आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./15804/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 21-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15804
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652F0240A** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **RAJESH KUMAR PALI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MOTI LAL PALI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **KASTURI DEVI BAGH** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O VIJAY KUMAR BAGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)

आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./15806/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 21-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15806
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652E00057** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MAHESH KUMAR PANDEY** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAM AVTAR PANDEY** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **VINAY KUMAR SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **YADRAM SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)

आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./15808/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 21-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15808
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652F0012B** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MS ISHIKA CONSTRUCTION BY RAMESH DHANGAR SURESH DHANGAR, S/O BABU LAL DHANGAR, TULESHWARI DHANGAR D/O THAYKAMAL PAL, REKHA DHANGAR D/O GOPAL PRASAD DHANGAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAMESH DHANGAR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **JAGRITI SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O DINESH SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)

संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./15635/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 20-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15635
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **16** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107E00260** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **LAXMI GUPTA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PRADEEP GUPTA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **VIJAY KUMAR BAIGUR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GORELAL BAIGUR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)

संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./14160/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 21-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 14160
वार्ड का नाम- 03 -संत कबीर दास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **03** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR803E00104** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PARASRAM SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LILA RAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **BHARTI BAI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MITHLESH JANGHEL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)

संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./15853/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 21-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15853
वार्ड का नाम- 15 - ने. कन्हैयालाल बाजारी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **15** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR108D00060** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SURENDRAJEET SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती ... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1. **बलवीर कौर 2 हरदीप सिंह 3 रश्मी वेर्मा** पिता/पति, श्री/श्रीमती 1 **सुरेन्द्रजीत सिंह** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ ... / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शुक्रवार 22 नवंबर 2024

मुख्यमंत्री को पत्र लिख कर सर्व नाई समाज ने तिहरे हत्याकांड की जांच पीड़ित की नौकरी एवं दो करोड़ का मुआवजा की मांग की

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) बलरामपुर जिले में तिहरे हत्याकांड के परिप्रेक्ष्य में सर्व नाई सेन समाज की ओर से प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर इस तिहरे हत्याकांड की उच्च स्तरीय जांच एवं पीड़ित परिवार की नौकरी एवं मुआवजा की मांग की गई है।

प्रदेश के मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में उल्लेख किया गया है कि बलरामपुर जिले के दहेज कांड (कचनपुर) ग्राम में हुए तिहरे हत्याकांड के रूप में एक जघन्य अपराध हुआ जिसमें नर कंकाल ग्राम वासियों की सूचना पर पुलिस द्वारा बरामद हुई ।

मिले तीनों नर कंकाल हमारे समाज के थे तीनों मृतक हमारे समाज के थे हत्याकांड में 5 वर्षीय अबोध बालक तथा 17 वर्षीय माइनर बच्ची सहित उनकी मां की नृशंस हत्या की गई है मृतक के परिवार जनों ने बीते 1 अक्टूबर 2024 को मौखिक सूचना कुसमी थाने में दिया था। पुन: 5 अक्टूबर 2024 को कुसमी थाने में लिखित

शिकायत सूरजदेव ठाकुर निवासी कुम्हारपारा कुसमी बलरामपुर एवं परिवार जनों के द्वारा दिया गया।कार्यवाही न होने पर पुन: दिनांक 7 अक्टूबर 2024 को मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय बगिया में छत्तीसगढ़ शाशन को भेजा गया । इसी प्रकार पुन: मुख्यमंत्री को जांच व कार्यवाही हेतु पत्र लिखा था । यदि पुलिस द्वारा यथा समय कार्रवाई की गई होती तो इस हत्याकांड को रोका जा सकता था इस जघन्य हत्याकांड से हमारे सर्व नाई सेन समाज के लोग अत्यंत दुखी और आक्रोशित है ।समाज ने निम्न परिस्थितियों पर मुख्यमंत्री का ध्यान आकर्षित कर रहा है जिसमें परिस्थितियों से स्पष्ट है कि शासन प्रशासन द्वारा बरती गई लापरवाही और यथा समय समुचित कार्यवाही न किए जाने के कारण यह नृशंस हत्या कांड हुआ है इसलिए मृतक परिवार को 02 दो करोड रुपए राशि का मुआवजा शासन द्वारा दिया जाय मृतकों के परिवारजन से किसी एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी जाए,परिवार के 15 वर्षीय बच्ची कुमारी मधु ठाकुर की पढ़ाई का संपूर्ण खर्च शासन द्वारा वाहन की जाए ।कोई एक व्यक्ति अकेले एक साथ तीन लोगों की हत्या नहीं कर सकता और साक्ष्य को छिपाने और शव को दफ्ना नहीं सकता इससे स्पष्ट है की घटना में अन्य अपराधी शामिल होंगे इसकी गहन छानबीन कर अन्य अपराधियों को तत्काल गिरफ्तार की जाए तथा उन पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाए, मृतक के परिवार जनों की पुलिस को दी गई 1 अक्टूबर 2024 की मौखिक सूचना पर यदि पुलिस सक्रिय हो जाती और पुलिस द्वारा समुचित कार्यवाही की जाती तो यह नृशंस हत्याकांड नहीं होता ।जवाबदार पुलिस अधिकारियों के लापरवाही की वजह से यह हत्याकांड हुआ है इस कारण उन संबंधित पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध अपराधिक प्रकरण दर्ज किया जाए। टी आई का स्थानांतरण एकऔपचारिकता मात्र है।। अत अनुरोध है कि समाज के उक्त मांगों को अविलंब स्वीकार किया जाए यदि समाज की यह मागे पूर्ण नहीं की जाती तो समाज आदोलन करने के लिए बाध्य होगा जिसकी सपूर्ण जवाबदेही शासन प्रशासन की होगी। सूरजपुर एसडीम के माध्यम से पत्र की प्रतिमा राज्यपाल, गृहमंत्री,कलेक्टर के नाम सूरजपुर एस डी एम को समाज के राजकुमार पिंटू ठाकुर के नेतृत्व में सौंपा गया है।

संक्षिप्त समाचार

जिला निर्वाचन अधिकारी से मतदाता सूची में गड़बड़ी की जांच की मांग

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की युवा नेता प्रेमजीत सिंह ने जिला निर्वाचन अधिकारी सूरजपुर को पत्र लिखकर मतदाता सूची में भारी अनियमितता किए जाने पर इसकी जांच की मांग की है। युवा नेता ने पत्र में उल्लेख किया है कि नगरीय निकाय चुनाव 2024-25 में नगर पंचायत विश्रामपुर के वार्ड क्र. 14 के लगभग 36 से अधिक मतदाताओं के नाम वार्ड क्रमांक 12 में नगर पंचायत बिश्रामपुर के कम्प्यूटर ऑरेटर के द्वारा संबंधित वार्ड पार्षद से मिली भगत कर सम्मिलित कर दिया गया है। संबंधित मतदाताओं के द्वारा शिकायत करने के बावजूद भी नगर पंचायत द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है। संबंधित कर्मचारी के विरूद्ध पूर्व में भी कई शिकायत लंबित है, शासन के द्वारा उपरोक्त कर्मचारी का स्थानांतरण पत्थलगांव नगरपालिका में हो चुका है। शासन के स्थानांतरण के विरूद्ध न्यायालय से 45 दिन का स्थगन की अवधि भी समाप्त हुए लगभग 15 दिन हो चुके है किन्तु मुख्य नगरपालिका अधिकारी सुशील तिवारी के द्वारा कर्मचारी को रिलिज नही किया जा रहा है। कर्मचारी व सुशिल तिवारी भाजपा के एजेंट के रूप में कार्य कर रहे है। जिसकी शिकायत पहले भी की जा चुकी है। ऐसे कर्मचारियों के रहने से आगामी नगरीय निकाय के चुनाव प्रभावित होंगे। मतदाता सूची में गड़बड़ी से लेकर अन्य गलत कार्यों को करने के लिए कर्मचारी को रिलिज नहीं किया जा रहा है। अत: इसकी जांच कराकर संबंधित कर्मचारी पर आवश्यक कार्यवाही करने की कृपा करें। उक्त पत्र की प्रक्रिया जीता निर्वाचन अधिकारी के साथ-साथ राज्य निर्वाचन अधिकारी को भी पत्र प्रेषित की है।

ग्राम केवरा के किराना दुकान के गोदाम से 500 क्विंटल अवैध धान जप्त

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) -कलेक्टर श्री एस जयवर्धन के निर्देश पर जिले के सहकारी समितियों में अवैध धान की आवक, रिसाइक्लिंग, कोचियों-बिचौलियों द्वारा धान के अवैध विक्रय को रोकने के लिए राजस्व अमला सक्रिय रूप से कार्य करा है। प्रतापपुर एसडीएम श्रीमती ललिता भगत द्वारा लगातार दो दिन अवैध धान जब्ती का कार्यवाही की गई है। जिसके तहत आज ग्राम केवरा के किराना दुकान के पीछे बने गोदाम से 1300 बोरी (500 क्विंटल) धान की जब्ती की गई। जानकारी लेने पर दुकान के संचालक के पास मंडी लाइसेंस था परंतु उसके द्वारा जारी लाइसेंस के विरूद्ध तय सीमा से अधिक धान का भण्डारण गोदाम में पाया गया। जिसे लेकर दुकान संचालक के पास कोई संतोषजनक जवाब नहीं था। टीम के द्वारा प्रकरण बनाकर अग्रिम कार्यवाही हेतु प्रस्तुत किया गया है जिसमें मंडी अधिनियम के तहत आगे की कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी।

अवैध रेत परिवहन में लिप्त एक हाईवा गाड़ी जप्त

महासमुंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री विनय कुमार लंगेह के निर्देशन में जिले में अवैध रेत उत्खनन, भंडारण और परिवहन पर प्रशासन द्वारा सख्त कार्रवाई की जा रही है। राजस्व एवं खनिज विभाग की टीमों द्वारा सतत निरीक्षण और छापेमारी के जरिए अवैध खनन गतिविधियों पर रोक लगाने का प्रयास किया जा रहा है। इसी क्रम में आज खनिज विभाग ने अवैध रेत परिवहन में लिप्त एक हाईवा गाड़ी को जब्त किया। कार्रवाई के दौरान टीम को सूचना मिली कि हाईवा गाड़ी में अवैध रूप से रेत परिवहन किया जा रहा है। तत्काल मौके पर पहुंचकर टीम ने गाड़ी को रोका और जांच की। जांच में गाड़ी के पास वैध दस्तावेज नहीं पाए गए, रेत का परिवहन अवैध तरीके से किया जा रहा था। इसके बाद हाईवा गाड़ी को जब्त कर लिया गया और उचित कार्रवाई के लिए थाना तुमगांव को सुपुर्द कर दिया गया।

औद्योगिक इकाइयों की संयुक्त जांच टीम ने किया निरीक्षण

महासमुन्द(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी के निर्देश पर जिला स्तरीय गठित संयुक्त जांच टीम ने बिरकोनी स्थित औद्योगिक इकाइयों मेसर्स 9एम एवं मेसर्स एएसजी इंटरप्राइजेस का निरीक्षण किया। जांच दल में जिला परिवहन अधिकारी श्री राम कुमार ध्रुव, महाप्रबंधक जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र श्री मोहन साहू, श्रम पदाधिकारी श्री डी.एन. पात्र, सहायक संचालक औद्योगिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा श्री मनीष कुंजाम (जिला बलौदाबाजार) एवं पर्यावरण विभाग से श्री एस.के. चौधरी शामिल थे।

किन्नर मठ का प्रमुख बनने एक किन्नर ने दूसरे की सुपारी देकर करवाई हत्या,पांच गिरफ्तार

बलौदाबाजार(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के बलौदाबाजार जिले में किन्नर हत्याकांड का 48 घंटे के भीतर पुलिस ने पर्दाफाश कर लिया है। मामले में पुलिस ने पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। महिला किन्नर की हत्या वर्चस्व की लड़ाई के लिए सुपारी देकर करवाई गई थी। बता दें कि ढाबाडीह गांव के बंद पड़े पत्थर खदान में महिला की लाश मिली थी। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव के पास से ही डेढ़ लाख रुपए बरामद किये थे तथ प्रथम दृष्टया हत्या का मामला मानकर जांच शुरू की थी और घटना के 48 घंटे के अंदर ही पुलिस ने मामले को सुलझा लिया है। मामले का खुलासा करते हुए एसपी विजय अग्रवाल ने बताया, पुलिस को 18 नवंबर को ढाबाडीह के बंद पड़े खदान के पानी में एक महिला की लाश मिलने की सूचना मिली थी. पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और शव का खदान से बाहर निकाला। इस दौरान घटना स्थल से 500-500 की गड्डी में कुल डेढ़ लाख रुपए बरामद किया गया था। पुलिस शव की पहचान करने में जुटी रही। जांच में शव ग्राम जोरा, रायपुर निवासी किन्नर काजल का होना पाया गया, जिसकी गुमशुदगी की रिपोर्ट तेलीबांधा थाने में दर्ज थी। इस हत्याकांड में 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। एसपी अग्रवाल ने बताया, किन्नर मठ का प्रमुख बनने के लिए काजल को रास्ते से हटाने वारदात को अंजाम दिया गया है। इस हत्याकांड में बजरंग दल के कार्यकर्ता हिमांशु बंजारे भी शामिल है। हत्या में जिस गाड़ी का इस्तेमाल किया गया था उसमें हिमांशु भाई बजरंग दल लिखा हुआ है। किन्नरों के निवास भवन जोरा रायपुर में सभी किन्नर एक साथ रहते है, जिसमें आरोपी तपस्या किन्नर मुंबई से आकर रही है। काजल रायपुर की थी। हत्या की मुख्य आरोपी किन्नरों की प्रमुख बनना चाहती थी, इसके लिए उसके रास्ते की सबसे बड़ी चुनौती काजल थी। काजल को रास्ते से हटाने के लिए तपस्या ने हत्या की पूरी प्लानिंग की। मठ प्रमुख बनने की चाहत में आरोपी तपस्या ने निशा श्रीवास के साथ मिलकर काजल को रास्ते से हटाने की योजना बनाई।

बिरसा मुंडा की जयंती पर बैकुंठपुर में जनजातीय गौरव दिवस मनाया

कोरिया(विश्व परिवार)। भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर आज शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैकुंठपुर के खेल मैदान में जनजातीय गौरव दिवस का भव्य आयोजन स्कूल शिक्षा विभाग और खेल एवं युवा कल्याण विभाग के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। इस अवसर पर बालिका छात्रावास बैकुंठपुर की छात्राओं के लिए खेलकूद प्रतियोगिताओं के साथ-साथ जिला स्तरीय रंगोली और निबंध प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उरांव समाज के मुखिया विश्वास भगत ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा के संघर्षों और योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनकी प्रेरणा हमें सामाजिक और सांस्कृतिक समरसता की दिशा में कार्य करने की प्रेरणा देती है। बालिकाओं ने दौड़, कबड्डी और अन्य पारंपरिक खेलों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता में छात्राओं ने जनजातीय जीवन और भगवान बिरसा मुंडा के जीवन पर आधारित आकर्षक रंगोलियां बनाई और भगवान बिरसा मुंडा के योगदान और जनजातीय समाज के महत्व पर आधारित निबंध प्रतियोगिता में छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जनजातीय गौरव दिवस का उद्देश्य भगवान बिरसा मुंडा के जीवन और उनके आदर्शों को याद करते हुए जनजातीय समाज की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करना है। मुख्य अतिथि विश्वास भगत ने अपने संबोधन में कहा, भगवान बिरसा मुंडा ने अपने संघर्ष से समाज को एक नई दिशा दी। हमें उनके आदर्शों पर चलते हुए समाज को बेहतर बनाने की दिशा में कार्य करना चाहिए।ष् इस आयोजन ने जनजातीय समाज की संस्कृति, परंपरा और गौरव को नए आयाम दिए।

बिहारपुर महाविद्यालय में मनाया गया कौमी एकता सप्ताह दिवस

सूरजपुर(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ शासन उच्च शिक्षा विभाग के दिशा निर्देश में शासकीय नवीन महाविद्यालय चांदनी बिहारपुर में राष्ट्रीय स्तर पर कौमी एकता सप्ताह के तहत राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वाधान में रासेयो कार्यक्रम अधिकारी श्री धीरेंद्र कुमार जायसवाल के संचालन में सभी छात्र-छात्राएं और शिक्षको और अन्य कर्मचारियों की उपस्थिति में मनाया गया। कार्यक्रम अधिकारी जायसवाल के द्वारा कौमी एकता सप्ताह दिवस पर अपने विचार रखे गए उन्होंने बताया कि कौमी एकता दिवस अनेकता में एकता को दर्शाता है, कौमी एकता सप्ताह और सार्वजनिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता की ताकत को मजबूत करने के लिए और बढ़ावा देने के लिये मनाया जाता है। पूरे सप्ताह का समारोह पुरानी परंपराओं, संस्कृति और सहिष्णुता की कीमत और भाईचारे की भारतीय समाज में एक बहु-धार्मिक और बहु सांस्कृतिक धर्मों की पुष्टि करने के लिए सभी को एक नया अवसर प्रदान करता है। ये सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के लिए भी देश में निहित शक्ति और लचीलेपन को उजागर करने में सहायता करता है। इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य सभी छात्र छात्राओं और हम सभी शिक्षकों के माध्यम से हमारे क्षेत्र में अनेकता में एकता हो सभी लोग एक सद्भाव में रहे और अपने गांव मोहल्ला परिवार शहर जिला राज्य और देश को समृद्ध बनाने में अनेकता में एकता का पुरजोर प्रयास करें।

डबल इंजन की सरकार में न फंड की कमी न विकास कार्यों में देरी : उद्योग मंत्री लखन लाल देवांगन

शहर के विभिन्न वार्डों में 38 लाख के विकास कार्यों का मंत्री देवांगन ने किया भूमिपूजन

कोरबा(विश्व परिवार)। वाणिज्य उद्योग और श्रम मंत्री श्री लखन लाल देवांगन ने कोरबा नगर में विभिन्न वार्डों में 38 लाख रुपए की लागत से होने वाले विकास कार्यों का भूमिपूजन किया। वार्ड क्रमांक 55 बलगी में आयोजित भूमिपूजन कार्यक्रम में मंत्री श्री देवांगन की मुख्य आतिथ्य में दशहरा मैदान दुर्गा पंडाल के पास यादव समाज के मांग अनुरूप सामुदायिक भवन का निर्माण कार्य लागत 10 लाख रुपए

और वार्ड क्रमांक 01 सर्वमंगला पारा शिव मंदिर के पास सांस्कृतिक मंच का निर्माण कार्य लागत 5 लाख रुपए की लागत से होने वाले कार्य का भूमिपूजन संपन्न हुआ। इसी तरह तुलसीनगर वॉर्ड क्रमांक 02 में आयोजित भूमिपूजन कार्यक्रम में वार्ड क्रमांक 02 हनुमान मंदिर के सामने शेड निर्माण कार्य 8 लाख, वार्ड क्रमांक 32 रामपुर हाउसिंग बोर्ड कालोनी में सांस्कृतिक मंच निर्माण कार्य लागत 5 लाख, वार्ड क्रमांक 12 रेलवे कॉलोनी न्यू अमरैया पारा शिव मंदिर के पास निर्मित मंच का बाउंड्रीवाल निर्माण कार्य 5 लाख, वार्ड क्रमांक 29 शिवनगर पोड़ीबहार में गुरु दयाल मानिकपुरी के घर के पास सांस्कृतिक मंच निर्माण कार्य 5 लाख के कार्यों की नींव रखी गई। इस अवसर पर मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि जिन कार्यों का आज आधारशिला रखी जा रही है, इन कार्यों की मांग गणेश पूजा और अन्य कार्यक्रमों में विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य लोगों ने की थी।

कनकपुर, जयनगर धान उपार्जन केंद्र ,स्कूल आंगनबाड़ी केंद्र सिलफिली, का कलेक्टर ने किया दौरा

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- आज कलेक्टर एस जयवर्धन द्वारा ब्लॉक सूरजपुर अंतर्गत सिलफिली, पंडोनगर और जयनगर क्षेत्र का दौरा किया गया । इस अवसर पर उन्होंने प्राथमिक शाला कनकपुर का निरीक्षण किया। वहां उन्होंने विद्यालय में शिक्षकों की उपलब्धता, शिक्षकों एवं बच्चों की उपस्थिति , बच्चों के पढ़ाई के स्तर की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने विद्यार्थियों की क्लास भी ली। बच्चों से बातचीत कर उन्होंने उनकी समस्याओं को जाना और स्कूल की समस्याओं के निराकरण के लिए आवश्यक निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने आंगनबाड़ी केंद्र पांडोनगर का निरीक्षण कर आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं से बच्चों को प्रदान की जाने वाली सुविधाओं की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने पडोनगर राष्ट्रपति भवन का भी निरीक्षण किया। उन्होंने पण्डो समुदाय के लोगों से बातचीत कर उनके समस्याओं का

जाना और इसके लिए सम्बंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने सिलफिली के समीप पहाड़ गांव पर्यटन केंद्र का भी निरीक्षण कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने लटोरी तहसील एवम उप तहसील पिलखा अंतर्गत कनकपुर और जयनगर के धान उपार्जन केंद्र का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने मौके पर उपस्थित अधिकारी-कर्मचारियों को धान खरीदी कार्य को सुचारू रूप से संपन्न कराने हेतु धान खरीदी केंद्र में सभी व्यवस्थाएँ सुनिश्चित हो इसके लिए सतत मॉनिटरिंग के निर्देश दिए। श्री जयवर्धन ने धान खरीदी केंद्र में किसानों से खरीदे गए

धान के बारदाने का अवलोकन कर धान के गुणवत्ता को परखा, इसके साथ ही धान की नमी का आर्द्रता माप यंत्र में अवलोकन भी किया। उन्होंने समिति प्रबंधक एवं कर्मचारियों को वास्तविक किसानों के रकबे की धान की खरीदी हेतु जरूरी व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

अपने दौरे में कलेक्टर श्री जयवर्धन ने आत्मानंद विद्यालय जयनगर का भी निरीक्षण किया । इस दौरान उन्होंने आत्मानंद विद्यालय में उपलब्ध सुविधाएं, शिक्षकों की उपस्थिति, बच्चों के शैक्षणिक स्तर के सम्बन्ध में जानकारी लेबर आवश्यक निर्देश दिए।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर शुक्रवार 22 नवंबर 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

चीन से आर्थिक रिश्तों में सावधानी जरूरी

दुर्दशा का तथ्य नकारना व्यर्थ

देहाती इलाकों में कर्ज के बोझ तले दबे परिवारों की संख्या में साढ़े चार प्रतिशत इजाफा हुआ है। 2016-17 के सर्वे के दौरान ऐसे परिवारों की संख्या 47.40 प्रतिशत थी, जो ताजा सर्वे के समय 52 फीसदी हो चुकी थी। एक और सरकारी संस्था की रिपोर्ट ने श्रमिक वर्ग की बढ़ती रही दुर्दशा पर रोशनी डाली है। राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण बैंक (नाबार्ड) के अखिल भारतीय ग्रामीण वित्तीय समावेशन सर्वे (एनएएफआईएस) 2021-22 के दौरान पाया गया देहाती इलाकों में कर्ज के बोझ तले दबे परिवारों की संख्या में साढ़े चार प्रतिशत इजाफा हुआ है। 2016-17 के सर्वे के दौरान ऐसे परिवारों की संख्या 47.40 प्रतिशत थी, जो ताजा सर्वे के समय 52 फीसदी हो चुकी थी। कहा जा सकता है कि अब ज्यादा लोग लाइफ स्टाइल बढ़ाने के लिए कर्ज ले रहे हैं। मगर आय की स्थिति पर गौर करें, तो ऐसे तर्क निराधार मालूम पड़ेंगे। ताजा सर्वे में ग्रामीण परिवारों की औसत मासिक आय 12,698 रु. सामने आई। इसमें पांच साल में डेढ़ गुना से ज्यादा बढ़ोतरी हुई। तब औसत आमदनी 8,059 रु. थी। राष्ट्रीय परिवार 4.4 व्यक्तियों का है। तो हर व्यक्ति पर आय 2,886 रु. बैठती है। यानी प्रति दिन एक व्यक्ति की खर्च क्षमता 96 रुपये होगी। यह औसत आय है, जिसमें ग्रामीण इलाकों के सबसे धनी और गरीब दोनों तबकों की आमदनी शामिल है। 2013-14 में रंगराजन समिति ने भारत की गरीबी रेखा 32 रु. प्रति दिन खर्च क्षमता रखने का सुझाव दिया था। दस साल की मुद्रास्फीति से उसे एडजस्ट करें, तो ये रकम आज तकरीबन 60 रुपये बैठेगी। इस पैमाने पर पर अनुमान लगाएं, तो संभव है कि भारत में आधे से ज्यादा लोग गरीबी रेखा के नीचे आएंगे। वैसे, जिन परिवारों की औसत आय 12 हजार रुपये हो, वे लाइफ स्टाइल संबंधी चीजों की खरीद के लिए कर्ज लें, यह मानने का कोई तुक वैसे भी नहीं है। तो जाहिर है, शिक्षा, स्वास्थ्य और शादी-विवाह आदि जैसे खर्चों के लिए कर्ज लेने वाले परिवार बढ़े हैं। इसके पहले लेबर ब्यूरो की पारिश्रमिक दर सूचकांक रिपोर्ट, कृषि मंत्रालय के जारी हुए आंकड़ों, तथा पीरियोडिक लेबर फोर्स सर्वे रिपोर्ट आदि में बताया जा चुका है कि श्रमिक वर्ग की वास्तविक आय गिरी है और औसत आय में वृद्धि गतिरुद्ध हो गई है। उपभोग और मांग गिरने की बातें सामने आ चुकी हैं। ऐसे में दुर्दशा का तथ्य नकारना व्यर्थ है।

डा. जयंतीलाल भंडारी

घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने और आयात नियंत्रित करने से संबंधित उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना (पीएलआई) के क्रियान्वयन में तेजी के साथ मेक इन इंडिया और स्वदेशी अपनाओ अभियान को तेजी से बढ़ाना होगा। मैन्युफैक्चरिंग उत्पादन के लिए नई घरेलू क्षमताएं तैयार करनी होंगी और नए स्रोत तलाश करने होंगे हाल ही में चीन के साथ भारत के नए सैन्य समझौते के बाद भारत को चीन से आयातों के ढेर से बचने के लिए फूंक-फूंक कर कदम रखना जरूरी दिखाई दे रहा है। गौरतलब है कि 31 अक्टूबर को खुशियों के महापर्व दीपावली के दिन भारत-चीन सीमा पर भारत-चीन दोनों देशों के सैनिकों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर दीपावली मनाई। इस खुशी का कारण यह है कि विगत 23 अक्टूबर को रूस के कजान में 16वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से इतर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग के बीच सार्थक और सफल द्विपक्षीय वार्ता हुई और पांच साल बाद हुई इस वार्ता में दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर जोर दिया। दोनों नेताओं ने पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर सैन्य गतिरोध को हल करने के लिए समझौते का स्वागत किया और अधिकारियों को लद्दाख में सीमा विवाद सुलझाने के लिए आगे बातचीत जारी रखने के निर्देश दिए। यही कारण है कि इस वार्ता के बाद सैन्य स्तर पर तत्परतापूर्वक क्रियान्वयन के साथ डेमचोक और डेपसांग मैदानी क्षेत्रों में टकराव वाले दो बिंदुओं से सैनिकों की पूर्ण वापसी के बाद अब पेट्रोलिंग शुरू हो गई है। उल्लेखनीय है कि भारत और चीन के बीच संबंध सामान्य करने की इस वार्ता के सफल और सार्थक होने के पीछे एक बड़ा ही महत्वपूर्ण कारण यह भी रहा है कि चीन इस समय अभूतपूर्व विपरीत आर्थिक हालात का सामना कर रहा है। पिछली कुछ तिमाहियों से चीन की अर्थव्यवस्था लगातार धीमी पड़ रही है। चीन की विकास दर घटी है। 22 अक्टूबर को जारी अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2024-25 में चीन की विकास दर गिरावट के साथ 4.8 फीसदी होगी, जबकि भारत की विकास दर 7 फीसदी होगी। चूंकि भारत में चीनी निवेश के लिए नियम कड़े हैं और चीन भारत के बाजार में बढ़ना चाहता है, ऐसे में चीन

वार्ता के लिए तत्पर हुआ। चीन ने इस बात को भी समझा है कि भारत ने चालू वित्त वर्ष 2024-25 के बजट के माध्यम से मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को मजबूत करते हुए आयात घटाने व निर्यात बढ़ाने के अभूतपूर्व प्रावधान किए हैं, ताकि चीन का भारतीय बाजारों पर जो दबदबा बना हुआ है, उसमें भी कमी आ सके। खास बात यह भी है कि हाल ही में अमेरिका के नए राष्ट्रपति चुने गए डोनॉल्ड ट्रंप के द्वारा अमेरिकी उद्योग-कारोबार को हरसंभव तरीके से आगे बढ़ाने की प्राथमिकता के तहत चीन से आयातों पर 60 फीसदी तक टैक्स आरोपित किए जाने की संभावना और विभिन्न यूरोपीय व अन्य कई देशों के द्वारा चीनी आयातों पर असाधारण आयात प्रतिबंध के परिदृश्य के बीच चीन की आर्थिक चिंताएं बढ़ गई हैं। इतना ही नहीं, इस समय चीन अमेरिकी निवेशकों की प्राथमिकता खोता जा रहा है। अमेरिका और चीन में बढ़ते तनाव के माहौल में नई रिपोर्टों में पाया गया कि चीन में कार्यरत अनेक वैश्विक कंपनियां अपना कारोबार चीन से समेटने की तैयारी में हैं। इस तरह जहां अब चीन के लिए भारतीय बाजार जरूरी है, वहीं भारत को भी अपने मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र के लिए चीन से विभिन्न कच्चे माल की सरल आपूर्ति जरूरी है। अब भारत के लिए भी चीन से साथ आर्थिक वार्ता के लाभ हो सकते हैं। ज्ञातव्य है कि चीन 2023-24 में अमेरिका को पीछे छोड़कर भारत का सबसे बड़ा कारोबारी साझेदार बन गया है। भारत दूरसंचार और बिजली संबंधी कलपुर्जों, इलेक्ट्रॉनिक्स, सोलर पैनल और औषधियों समेत कई उच्च प्रौद्योगिकी वाली वस्तुओं के लिए चीन पर निर्भर है। ध्यान देने वाली बात है कि सीमा पर तनाव के बावजूद चीन के साथ भारत का व्यापार लगातार बढ़ता रहा है और संतुलन पूरी तरह चीन के पक्ष में झुका हुआ है। हाल ही में प्रकाशित आंकड़ों के मुताबिक चालू वित्त वर्ष 2024-25 के पहले छह महीनों यानी अप्रैल से सितंबर 2024 के दौरान भारत का चीन के साथ अब तक का सर्वाधिक व्यापार घाटा दर्ज किया गया है। इस अवधि में चीन से आयात बढ़कर 56.29 अरब डॉलर हो गया। जबकि चीन को सिर्फ 6.91 अरब डॉलर का निर्यात किया गया। यदि हम पिछले संपूर्ण वित्त वर्ष 2023-24 में चीन के साथ भारत के व्यापार को देखें तो पाते हैं कि चीन से आयात 101.75 अरब डॉलर हुआ था। जबकि चीन को निर्यात 16.66 अरब डॉलर रहा तथा चीन के साथ व्यापार घाटा 85.09 अरब डॉलर रहा है। भारत के आयात बाजार में चीन पहले स्थान पर है, तो निर्यात बाजार में चीन पांचवें स्थान पर है। ऐसे में अब भारत को चीन से आर्थिक वार्ता का जो मौका मिलेगा और चीन से आर्थिक रिश्ते सुधरने की जो संभावना है, उसके तहत भारत चीन के साथ कारोबार असंतुलन को कम करने के लिए प्रभावी बात कर सकता है। भारत चीन पर उन वस्तुओं के लिए दरवाजे खोलने को लेकर दबाव बना सकता है, जिनके लिए चीन ने सख्त नियम और गुणवत्ता को आधार बनाकर भारत से निर्यात को हतोत्साहित किया है। इनमें जेनेरिक दवाइयां, छोटी कार, पालिश डायमंड तथा मांस प्रमुखतया शामिल हैं। ज्ञातव्य है कि भारत 185 से अधिक देशों को सैंकड़ों वस्तुओं का निर्यात करता है। अमेरिका, फ्रांस और ब्रिटेन जैसे देश भी भारत के उत्पादों के खरीददार हैं, लेकिन चीन हमारे उत्पादों की गुणवत्ता का सवाल उठाता है। सख्त नियमों से भारतीय फल और सब्जियां चीनी बाजार में हतोत्साहित की जाती हैं। बहरहाल भारत और चीन के बीच सार्थक वार्ता के बाद भारत को चीन से आर्थिक वार्ता को आगे बढ़ाते समय सावधान और सतर्क रहना होगा। चीन के द्वारा विश्वास तोड़ने के कई मौके भारत भूल नहीं सकता है। विगत दिनों अमेरिका के व्हार्टन बिजनेस स्कूल और अन्य कार्यक्रमों में संवाद के दौरान वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा कि हम आंख बंद करके एफडीआई स्वीकार नहीं कर सकते। यद्यपि हमें निवेश की जरूरत है, लेकिन हमें देखना होगा कि यह निवेश किस देश से आ रहा है। हमें कुछ सुरक्षा उपाय भी करने होंगे, क्योंकि भारत ऐसे पड़ोसियों से घिरा है जो बहुत ही संवेदनशील हैं। नि:संदेह हमें चीन से शीघ्रतापूर्वक अच्छे आर्थिक संबंधों की उम्मीद नहीं पालनी चाहिए। चीन का हृदय परिवर्तन हो गया है, यह कहना जल्दबाजी होगी। ऐसे में चीन पर निर्भरता कम करने के लिए एक व्यापक नीति की जरूरत बनी हुई है। ऐसी नीति जिसमें चीन की तरह भारत के द्वारा भी चीन से आयात होने वाले उत्पादों पर एंटीडंपिंग शुल्क लगाने की रणनीति जारी रखी जाए। जिस तरह हाल ही में यूरोपीय यूनियन और अन्य विकसित देशों के द्वारा चीन से आयात नियंत्रित करने के लिए गैर टैरिफ अवरोध के साथ अन्य आयात प्रतिबंधों को असाधारण रूप से बढ़ाया गया है, उसी तरह भारत के द्वारा संरक्षणवाद के तरीके अपनाते हुए चीन से तेजी से बढ़ रहे आयात और चीन के साथ बढ़ते हुए व्यापार घाटे को नियंत्रित करने के लिए रणनीतिक रूप से आगे बढना होगा। घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने और आयात नियंत्रित करने से संबंधित उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना (पीएलआई) के क्रियान्वयन में तेजी के साथ मेक इन इंडिया और स्वदेशी अपनाओ अभियान को तेजी से बढ़ाना होगा। मैन्युफैक्चरिंग उत्पादन के लिए नई घरेलू क्षमताएं तैयार करनी होंगी और नए स्रोत तलाश करने होंगे। साथ ही देश की बड़ी कंपनियों को शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में भी तेजी से आगे बढना होगा। हम उम्मीद करें कि हाल ही में भारत-चीन के बीच द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने के लिए जो सार्थक वार्ता और उसका क्रियान्वयन शुरू हुआ है।

आलेख

अमरीका में शरण मांगने वालों में 855 फीसदी की वृद्धी.....

भूपेन्द्र गुप्ता

एक समय था जब ब्रिगेडियर उस्मान को बंटवारे के समय पाकिस्तान का सेनाध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव दिया गया था लेकिन उन्होंने यह कहकर इनकार कर दिया था कि भारत मेरा देश है इस धरती में मेरे बुजुर्ग दफन हैं।उन्होंने पाकिस्तान का सेनाध्यक्ष बनने की बजाय भारत का ब्रिगेडियर बना रहना स्वीकार किया और अपना नौसेरा बचाने के लिये शहीद हो गये।वह तो अनिश्चितता का समय था,जान-माल का खतरा था किंतु आज तो निश्चंतता का समय है। संवैधानिक और नियामक संस्थायें देश को आजादी के प्रति सजग कर रहीं हैं ऐसे दौर में कुछ खबरें हैरान भी करतीं हैं और चिंतित भी। संसद में एक प्रश्न के उत्तर में बताया गया है कि पिछले 10 सालों में लगभग 15 लाख भारतीय नागरिकों ने देश की नागरिकता त्याग दी है ।इससे भी जो ज्यादा चिंताजनक आंकड़ा है वह यह कि अमेरिका में शरण मांगने वाले भारतीयों की संख्या में 855 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। विदित हो कि अमेरिका में शरण मांगने वाले दो तरह से शरण के लिए आवेदन करते हैं एक तो वह जिन्हें एफमेंटिव कहा जाता है और दूसरा वे जिन्हें डिफेंसिव कहा जाता है यानि सुरक्षा की दृष्टि से वे अमेरिका में शरण की गुहार लगाते हैं अमेरिका की होमलैंड सिक्योरिटी डिपार्टमेंट की इमीग्रेंट एनुअल फ्लो रिपोर्ट बताती है कि 2023 में अमेरिका में शरण चाहने वाले आवेदकों में 41हजार 330 भारतीय शामिल थे जो कि 2022 की तुलना में 855 फ़ीसदी ज़्यादा है और भी आश्चर्यजनक बात यह है कि इसमें से आधे आवेदक गुजरात राज्य के हैं।जहां 2014 के बाद समृद्धि का विस्फोट हुआ है। समझना जरूरी है कि उन भारतीयों ने क्योंकर सुरक्षा एसाईलम के लिये आवेदन किया है? वर्ष 2022 में शरणार्थी के रूप में आवेदन करने वाले 14 हजार 570 भारतीयों में से 9200 ने डिफेंसिव एसाईलम यानि सुरक्षा शरण का आवेदन किया है। भारत की अर्थव्यवस्था के उछालें भरने के दावे ,आम नागरिक के लिये सुरक्षा की गारंटी और बेहतर अवसरों के प्रचार के बीच भी अगर 41हजार 330 नागरिक अमरीका में शरण मांग रहे हैं और उनमें भी 50त्न से अधिक सुरक्षा कारणों से तो यह पड़ताल का विषय होना ही चाहिए ? इन सुरक्षा शरण चाहने वाले भारतीयों को देश में क्या खतरा लग सकता है? उनमें से आधे उस राज्य से क्यों हैं जिसमें सर्वाधिक विकास के दावे किये जा रहे हैं? अमरीका में एलपीआर रिपोर्ट के अनुसार लगभग 28 लाख भारत में जन्मना नागरिक रहते हैं जो मेक्सिको में पैदा हुए अमरीकी नागरिकों के बाद सर्वाधिक संख्या है।अकेले 2022 में ही 1लाख 28 हजार 878 मेक्सीकन,65 हजार.960 भारतीय,53 हजार 413 फिलिपाईन नागरिकों को अमरीकी नागरिकता के लिये न्यूट्रिलाईज किया गया है। ऐसा माना जाता है कि सामान्यतःआर्थिक ,शैक्षणिक अवसरों और राजनैतिक स्थिरता को देखते हुए सुरक्षित भविष्य की तलाश में लोग अपनी नागरिकता त्याग करने का कठिन फैसला लेते हैं।अमरीका में रहने वाले 28 लाख 31 हजार 330 भारतीयों में 42 फीसदी भारतीय , अमरीकन नागरिकता के लिये अपात्र हैं। इसके बावजूद भारतीय ब्रेन इतनी बड़ी तादाद में जोखिम क्यों उठा रहा है? मोटा-मोटी सभी देशों से आर्थिक प्रवासी अवसरों की तलाश करते हैं जिसमें आऊटफ्लो और इनफ्लो की मात्रा देश की वास्तविक परिस्थितियों का बखान कर देती है। जिन 10 वर्षों में 15 लाख भारतीयों ने नागरिकता छोडने का आवेदन किया है उसी दौरान विगत पांच सालों में मात्र 5 हजार220 विदेशियों को भारतीय नागरिकता दी गई है उनमें 4 हजार 552 यानि 87 फीसदी तो पाकिस्तानी, 8 फीसदी अफगानिस्तानी और 2 फीसदी बंगलादेशी हैं। इसका अर्थ है कि भारतीय नागरिकता त्यागने वालों के मुकाबले भारतीय नागरिकता चाहने वालों की संख्या 1 प्रतिशत भी नहीं है। लंदन की हेनली एंड पार्टनर की एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 7 हजार सुपर रिच धनाढ्य भारत की नागरिकता छोड़ सकते हैं।सरकार ने राज्यसभा में बताया है कि वह इन लोगों की व्यावसायिक पृष्ठभूमि के बारे में अनभिज्ञ है।भारतीय टेक्स कानूनों,स्वास्थ्य सुविधाओं और इनवेस्टमेंट माईग्रेशन नागरिकता त्यागने की नयी बजह के रूप में सामने आ रही है। मेहुल चौकसी जैसे लोग इसी इवेस्टमेंट माईग्रेशन के नाम पर भाग खड़े हुए हैं।

पाकिस्तान की हिमाकत पर कोई हैरानी नहीं

बलबीर पुंज

समिति की रिपोर्ट में कहा गया है कि भगत सिंह मुसलमानों के प्रति शत्रुतापूर्ण मजहबी नेताओं से प्रभावित थे और भगत सिंह फाउंडेशन इस्लामी विचारधारा और पाकिस्तानी संस्कृति के खिलाफ काम कर रहा है, (और) इस पर प्रतिबंध लगना चाहिए। बकौल रिपोर्ट, फाउंडेशन के अधिकारी जो खुद को मुस्लिम कहते हैं, क्या वह नहीं जानते कि पाकिस्तान में किसी नास्तिक के नाम पर किसी जगह का नाम रखना अस्वीकार्य है और इस्लाम में मानव मूर्तियां प्रतिबंधित है? जो समूह भारत-पाकिस्तान संबंध और सिख-मुस्लिम सद्भावना' की संभावनाओं पर बल देते है, वह हालिया घटनाक्रम पर क्या कहेंगे? बीते दिनों पाकिस्तानी पंजाब की सरकार ने यह कहते हुए शादमान चौक का नाम शहीद भगत सिंह समर्पित करने की वर्षों पुरानी मांग को ठंडे बस्ते में डाल दिया कि भगत सिंह क्रांतिकारी नहीं, बल्कि %अपराधी' और आज की परिभाषा में %आतंकवादी' थे। जैसे ही यह खबर भारत पहुंची, तुरंत विभिन्न राजनीतिक दलों ने पाकिस्तान को गरियाना शुरू कर दिया। परंतु मुझे पाकिस्तान की इस हिमाकत पर कोई हैरानी नहीं हुई। क्या इस इस्लामी देश से किसी अन्य व्यवहार की उम्मीद की जा सकती है? लाहौर में जिस स्थान पर 23 मार्च 1931 को महान स्वतंत्रता सेनानियों— भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दी गई थी, वह जगह शादमान चौक नाम से प्रसिद्ध है। इसी मामले में 8 नवंबर को लाहौर उच्च न्यायालय में सुनवाई थी। तब %भगत सिंह मेमोरियल फाउंडेशन पाकिस्तान' द्वारा अदालत में दायर एक याचिका पर लाहौर प्रशासन ने जवाब देते हुए कहा, शादमान चौक का नाम भगत सिंह के नाम पर रखने और वहां उनकी प्रतिमा लगाने की प्रस्तावित योजना को पूर्व नौसेना अधिकारी तारिक मजीद की टिप्पणी के आलोक में रद्द कर दिया गया है। मजीद मामले में गठित समिति का हिस्सा है और उन्होंने कहा था कि भगत सिंह ने एक ब्रिटिश पुलिस अधिकारी की हत्या की थी, इसलिए उन्हें दो साथियों के साथ फांसी दे दी गई थी। इसी समिति की रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि भगत सिंह मुसलमानों के प्रति शत्रुतापूर्ण मजहबी नेताओं से प्रभावित थे और भगत सिंह फाउंडेशन इस्लामी विचारधारा और पाकिस्तानी संस्कृति के खिलाफ काम कर रहा है, (और) इस पर प्रतिबंध लगना चाहिए। बकौल रिपोर्ट, फाउंडेशन के अधिकारी जो खुद को मुस्लिम कहते हैं, क्या वह नहीं जानते कि पाकिस्तान में किसी नास्तिक के नाम पर किसी जगह का नाम रखना अस्वीकार्य है और इस्लाम में मानव मूर्तियां प्रतिबंधित है मामले में अगली सुनवाई 17 जनवरी 2025 को होगी। पाकिस्तान में भगत सिंह का रिश्ता केवल लाहौर जेल तक सीमित नहीं है। जिस अविभाजित पंजाब के लायलपुर में उनका जन्म हुआ था, वह भी अब पाकिस्तान में है। लाहौर के ही नेशनल कॉलेज में भगत सिंह के अंदर क्रांति के बीज फूटे थे और %नौजवान भारत सभा' का गठन भी लाहौर में किया था। यदि इस पृष्ठभूमि में पाकिस्तान भगत सिंह को अपना %नायक' मान लेता, तो ऐसा करके वह अपने वैचारिक अस्तित्व, जिसे %काफिर-कुफ्र' अवधारणा से प्रेरणा मिलती है— उसे प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से नकार देता। पाकिस्तानी सत्ता-वैचारिक अधिष्ठान के लिए भगत सिंह भी एक %काफिर' है। भारतीय उपमहाद्वीप में इस जहरीले चिंतन की जड़ें बहुत गहरी है। गांधीजी ने अली बंधुओं (मौलाना मुहम्मद अली जौहर और शौकत अली) के साथ मिलकर विदेशी खिलाफत आंदोलन (1919-24) का नेतृत्व किया था। परंतु मौलाना मुहम्मद अली जौहर स्वयं गांधीजी के बारे में क्या सोचते थे, यह उनके इस विचार से स्पष्ट है— गांधी का चरित्र चाहे कितना भी शुद्ध क्यों न हो, मजहब की दृष्टि से वे मुझे किसी भी चरित्रहीन मुसलमान से हीन प्रतीत होते हैं। बात यदि वर्तमान पाकिस्तान की करें, तो वह विभाजन के बाद अपने दस्तावेजों, स्कूली पाठ्यक्रमों और अपनी आधिकारिक वेबसाइटों में इस बात का उल्लेख करता आया है कि उसकी जड़ें सन् 711-12 में इस्लामी आक्रांता मुहम्मद बिन कासिम द्वारा हिंदू राजा दाहिर द्वारा शासित तत्कालीन सिंध पर किए हमले में मिलती हैं। इसमें कासिम को पहला पाकिस्तानी', तो सिंध को दक्षिण एशिया का पहला इस्लामी प्रांत' बताया गया है। जिन भारतीय क्षेत्रों को मिलाकर अगस्त 1947 में पाकिस्तान बनाया गया था, वहां हजारों वर्ष पहले वेदों की ऋचाएं सृजित हुईं थीं और बहुलतावादी सनातन संस्कृति का विकास हुआ था। इसलिए पुरातत्वविदों की खुदाई में वहां आज भी वैदिक सभ्यता के प्रतीक उभर आते हैं, जिसका इस्लाम में कोई स्थान नहीं है। परंतु पाकिस्तान अपनी छवि सुधारने के नाम पर मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, सिंधु घाटी, आर्य सभ्यता, कौटिल्य और गांधार कला से जोडने का प्रयास करता है। इसी वर्ष 29 मई को पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा था, पाकिस्तान को अपनी प्राचीन बौद्ध विरासत पर गर्व है। वास्तव में, यह क्रूरतम मजाक है। जिन इस्लामी आक्रांताओं— कासिम, गजनवी, गौरी, बाबर, टीपू सुल्तान आदि को पाकिस्तान अपना घोषित %नायक' मानता है, जिनके नामों पर उसने अपनी मिसाइलों-युद्धपोतों का नाम रखा है— उन्होंने ही %काफिर-कुफ्र' अवधारणा से प्रेरित होकर भारतीय उपमहाद्वीप में गैर-इस्लामी प्रतीकों (हिंदू-बौद्ध सहित) का विनाश किया था। इस चिंतन में आज भी कोई बदलाव नहीं आया है। जब जुलाई 2020 में खैबर पख्तूनख्वा में निर्माण कार्य के दौरान जमीन से भगवान गौतमबुद्ध की एक प्राचीन प्रतिमा मिली थी, तब स्थानीय मौलवी द्वारा इसे गैर-इस्लामी बताने पर लोगों ने मूर्ति को हथौड़े से तोड़ दिया था। पाकिस्तानी राष्ट्रगान (कौमी तराना) का मामला और भी दिलचस्प है। वर्ष 1947 में इस्लाम के नाम पर खूनी विभाजन के बाद शेष विश्व के सामने पाकिस्तान को तथाकथित सेकुलर' दिखाने के लिए मोहम्मद अली जिन्नाह ने हिंदू मूल के उर्दू शायर जगन्नाथ आजाद द्वारा लिखित एक उर्दू गीत को राष्ट्रगान बनाया था।

बुलडोजर न्याय में हो रही मनमानी पर रोक....

योगेंद्र योगी

अतिक्रमण के मामले में वोट की राजनीति की बदौलत ही छोटे-बड़े शहरों में अवैध कच्ची-पक्की बस्तियां तक बस गईं। ये अतिक्रमण सालों-साल चलते रहे हैं, किंतु नेता-अफसरों के गठजोड़ के कारण इन्हें जड़ से खत्म नहीं किया जा सका। दरअसल बुलडोजर तो ऐसे अतिक्रमणों पर चलना चाहिए, जिन्होंने देश के आम लोगों का पैदल चलना तक दूभर कर रखा है सरकारों की गलतफहमी है कि एक बार चुनाव जीतने के बाद उन्हें मनमानी का अधिकार मिल जाता है। इसी भ्रम में सरकारें अपने को अदालत से ऊपर समझने लगती हैं। सुप्रीम कोर्ट ने बुलडोर एक्शन के मामले में फैसला देकर सरकारों का यह सपना तोड़ दिया है। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने यह फैसला दिल्ली की आप सरकार के मामले में दिया है, किन्तु यह लागू सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों पर होता है। सुप्रीम कोर्ट ने 13 नवंबर को बुलडोजर एक्शन के खिलाफ दायर याचिका पर फैसला सुनाते हुए तीखी टिप्पणी की। साथ ही बुलडोजर की कार्रवाई को लेकर गाइडलाइन तय कर दी। फैसला सुनाते हुए कोर्ट ने दो टूक कहा कि किसी भी मामले में आरोपी होने या दोषी ठहराए जाने पर भी घर तोडना सही नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने जमीयत उलेमा-ए-हिन्द बनाम उत्तरी दिल्ली नगर निगम व अन्य से संबंधित केस में दो टूक कहा है कि इस मामले में मनमाना रवैया बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अधिकारी मनमाने तरीके से काम नहीं कर सकते। बगैर सुनवाई आरोपी को दोषी करार नहीं दिया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाते हुए कहा कि अपना घर पाने की चाहत हर दिल में होती है। यद्यपि यह फैसला दिल्ली सरकार से संबंधित है, पर इसमें कोई दो राय नहीं है कि इस फैसले के बाद अब योगी सरकार के लिए बुलडोजर एक्शन लेना भी मुश्किल हो जाएगा। कार्यपालिका के पास असीम शक्तियां होती हैं। इसी बल पर हर साल सुप्रीम कोर्ट के आदेशों को कार्यपालिका विभिन्न कारणों को आधार बनाकर सैकड़ों आदेशों का अनुपालन नहीं करती है। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार से शुरू हुआ बुलडोजर एक्शन का यह सिलसिला पूरे देश में फैल गया था। राज्यों की सरकारों ने इसका राजनीतिक इस्तेमाल करने में कसर बाकी नहीं रखी। वोट बैंक राजनीति ऐसे फैसलों में साफ नजर आती है। हालांकि उत्तर प्रदेश में बुलडोजर एक्शन अपराधियों के आवास और व्यावसायिक प्रतिष्ठान गिराने के लिए लिया गया था। बुलडोजर

एक्शन में भी अपराधियों में भेदभाव के उदाहरण मौजूद हैं। इसका दुरुपयोग भी सांप्रदायिक आधार पर किया गया। इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसी सख्त कार्रवाई से अपराधियों में कहीं न कहीं खौफ उत्पन्न होता है। उत्तर प्रदेश में योगी सरकार ने जिस तरह माफिया या गैंगस्टर का सफाया किया, उससे काफी हद तक अपराधों पर लगाम लग सकी है। इस कार्रवाई से शायद ही कोई इत्तफाक रखता हो। सवाल यही आता है कि अपराध रोकने की आड़ में सरकार क्या कानून से ऊपर है। बुलडोजर एक्शन में यही बात नजर आती है। दरअसल यह काम देश की अदालतों का है कि सुनवाई के बाद आरोपी को सजा देने या नहीं देने का। बुलडोजर एक्शन में ऐसे न्याय की संभावना पहले ही खत्म हो जाती है, जहां बगैर किसी सुनवाई के फैसला सुना दिया जाता है। इससे यदि आरोपी गलत न भी हो तो उसे घर या दुकान तुड़वाने की सजा भुगतनी पड़ती है। जबकि सजा तय करने की जिम्मेदारी अदालतों की है। सरकारों की यह हरकत निश्चित तौर पर अदालतों के मामले में दखलअंदाजी रही है। बुलडोजर एक्शन की कार्रवाई सरकारों को बेशक सस्ती लोकप्रियता दिला सकती है, न्याय नहीं। महाराजगंज जिले में सडक़ के फोरलेन का चौड़ीकरण के संबंध में एक व्यक्ति का मकान गिराने को लेकर कोर्ट ने काफी तीखी टिप्पणी दी और उत्तर प्रदेश सरकार पर 25 लाख का जुर्माना भी लगाया। हालांकि यह विकास कार्यों के लिए की गई कार्रवाई थी। इसमें सरकार की वह मंशा नहीं थी कि किसी अपराधी का घर गैरकानूनी अवैध कब्जा की बात कहकर गिराई गई हो। फिर भी कोर्ट ने पीड़ित की बात सुनी। इस तरह के अतिक्रमण हटाने के भी कायदे-कानून बने हुए हैं। उनकी पालना किए बगैर सीधे बुलडोजर दौड़ा देना अन्याय ही कहा जाएगा। ऐसे मामलों की भी कमी नहीं हैं, जहां आम आदमी की सम्पत्ति को अतिक्रमण के नाम पर ढहा दिया जाता है, वहीं रसूखदारों की तरफ प्रशासन की आंख उठाने की भी हिम्मत नहीं होती। देश का शायद ही ऐसा कोई शहर होगा, जहां प्रभावशाली लोगों के अतिक्रमण तोडने में सरकार और प्रशासन ने उदाहरण पेश किए होंगे। सरकार और प्रशासन प्रभावशाली लोगों के सामने कैसे नतमस्तक हो जाते हैं, इसका सबसे बड़ा उदाहरण नोएडा के ट्विन टावर का मामला है। सुप्रीम कोर्ट ने अगस्त 2021 में सुपरटेक के नोएडा एक्सप्रेसवे पर स्थित एमराल्ड कोर्ट प्रोजेक्ट के अपैक्स और सियान टॉवरों को अवैध ठहराया था। दोनों 40 मंजिला टावरों को ढहाने का आदेश दिया गया। कोर्ट ने कंपनी को फ्लैट खरीददारों को ब्याज के साथ पैसे वापस करने का आदेश दिया। जबकि इस मामले में सरकार और नोएडा अथॉरिटी सब कुछ जानते हुए भी हाथ पर हाथ धरे हुए बैठे रहे।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, शुक्रवार 22 नवम्बर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

जैन दादाबाड़ी में आयोजित दीक्षा महोत्सव में सम्मिलित हुए राज्यपाल रमेन डेका

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्यपाल श्री रमेन डेका गत दिवस रायपुर के जैन दादाबाड़ी में आयोजित पंच दिवसीय दीक्षा महोत्सव में विशेष रूप से सम्मिलित हुए। इस अवसर पर राज्यपाल ने वहां स्थित मंदिर में विधिवत पूजा-अर्चना की और उपस्थित तपस्वी जैन मुनियों से प्रदेश की सुख-समृद्धि का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर राज्यपाल ने 12 कठिन व्रतों के साथ आत्मशुद्धि की क्रिया को मुमुक्षुओं द्वारा मानवता के लिए की जा रही कठोर तपस्या बताते हुए उनके त्याग और समर्पण को नमन किया। महोत्सव में रायपुर (उत्तर) विधायक श्री पुरंदर मिश्रा सहित बड़ी संख्या में जैन समुदाय के लोग उपस्थित रहे।

आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री साम्यसागरजी महाराज की संस्कृत पाठशाला द्वारा संस्कृत प्रश्नमंच

नांदणी (विश्व परिवार)। संस्कृत प्रश्नमंच- इसमें 1 दिसम्बर 2024 से 15 दिसम्बर 2024 तक लगातार 15 दिनों तक सही उत्तर देने वालों को प्रथम पुरस्कार दिया जायेगा। प्रतिदिन आपको एक लिंक दिया जायेगा जिस पर जाकर प्रश्नो के उत्तर दिए जायेंगे। लिंक का समय श्याम को 4 बजे से रात को 9 बजे तक वैध रहेगा। Sanskrit Pathshala ·¤ô instagram पर follow & Youtube पर Subscribe करना अनिवार्य है। चर्या शिरोमणी आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के शिष्य मुनी श्री साम्यसागर महाराज जी के द्वारा संस्कृत पाठशाला प्रारंभ की गयी हैं। आप सभी संस्कृत सिख सखते हो youTube channel Sanskrit Pathashala के माध्यम से। श्रमण मुनी श्री साम्यसागरजी महाराज न्याय, व्याकरण, सिद्धांत शास्त्रो के अध्ययन में अपने आपको समर्पित कर दिया। आचार्यश्री द्वारा सृजीत अनेक ग्रंथो का आपने संस्कृत में अनुवाद किया। जिनकी वाणी में माँ सरस्वती का वास हो, श्रुतदेवी माँ जिनकी लेखनी बनकर करकमलो में बसी है, अरिहंत भगवान की वाणी जिनके मुख से निकलती है वो है वंदनीय, पूज्यनीय मुनीश्री साम्यसागरजी महाराज। दीक्षा के बाद से आपने सभी चातुर्मास दिक्षा गुरू के साथ करके ज्ञान की गंगा बहाई है। नमोस्तु शासन जयवंत हो। **-अभिषेक अशोक पाटील**

वायु सेना भर्ती क़े सम्बन्ध में कैरियर मार्गदर्शन 25 से 29 नवम्बर तक

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। भारतीय वायु सेना भर्ती कार्यालय भोपाल क़े द्वारा जिले क़े शैक्षणिक संस्थाओ में भारतीय वायु सेना भर्ती क़े सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी क़े लिए कैरियर मार्गदर्शन का आयोजन 25 नवम्बर से 29 नवम्बर 2024 तक की जायेगी। इस कैरियर मार्गदर्शन में शामिल होकर युवा अपने कैरियर का लाभ उठा सकते हैं। निर्धारित कार्यक्रम क़े अनुसार 25 नवम्बर को शासकीय दाउ कल्याण महाविद्यालय बलौदाबाजार एवं शासकीय मिनीमाता कन्या महाविद्यालय बलौदाबाजार में सुबह 11 बजे से 1 बजे तक, शासकीय जीएनए महाविद्यालय भाटापारा, नवीन विधि महाविद्यालय भाटापारा, शासकीय आईटीआई देवरी भाटापारा दोपहर 3 बजे से 5 बजे तक जिसमें नवीन विधि महाविद्यालय भाटापारा, शासकीय पॉलीटेक्निक कॉलेज देवरी एवं आईटीआई देवरी भाटापारा भाग लेंगें।

विकास के लिए महत्वपूर्ण कारक...पेज-01 का शेष

आपके लाभार्थी आपके कार्यों से संतुष्ट हैं, तो वही सुशासन की सफलता है। सुशासन के लिए लक्षित लोगों तक योजनाओं और कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक पहुंचाने के लिए अच्छी नीयत सबसे ज़रूरी है। उन्होंने छत्तीसगढ़ में विभिन्न विकास प्राधिकरणों के गठन, रायपुर में कैनाल लिंकिंग रोड, एक्सप्रेस वे के निर्माण जैसे कई उदाहरण देते हुए कहा कि शासन-प्रशासन में यहां भी कई नवाचार हो रहे हैं। क्षेत्रीय और स्थानीय जरूरतों को देखते हुए उनके अनुरूप लोगों के कल्याण के काम हो रहे हैं।

केन्द्रीय प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग के अतिरिक्त सचिव श्री पुनीत यादव ने उद्घाटन सत्र में कार्मिक एवं जन शिकायतों के निराकरण के लिए विभाग द्वारा किए जा रहे नवाचारों की जानकारी दी। उन्होंने बताया की कई डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का उपयोग कर तेजी से शिकायतों का निराकरण किया जा रहा है। देश के विभिन्न भागों में हो रहे नवाचार, बेस्ट प्रेक्टिसेस और सुशासन के कार्यों को राष्ट्रीय स्तर पर रेखांकित और पुरस्कृत किया जा रहा है।

आज के पहले सत्र में चार राज्यों में हो रहे अलग-अलग नवाचारों को साझा किया गया। भारतीय लोक प्रशासन संस्थान के महानिदेशक श्री एस.एन. त्रिपाठी ने इस सत्र की अध्यक्षता की। उत्तरप्रदेश में जल जीवन मिशन के संचालक श्री अनुराग श्रीवास्तव ने वहां सौर आधारित सफल जल प्रदाय योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि सौर आधारित जल प्रदाय योजनाओं से उत्तरप्रदेश में अगले 30 सालों में एक लाख करोड़ रुपए की बचत होगी। इन योजनाओं से कार्बन उत्सर्जन भी कम होगा। ओड़िशा के कोरापुट जिले के कलेक्टर श्री वी. कीर्ति वासन ने ग्रामीण औद्योगिक काम्प्लेक्स के ज़रिए स्थानीय लोगों को रोज़गार से जोड़ने के लिए किए जा रहे नवाचार की जानकारी दी। भारतीय प्रशासनिक सेवा के नागालैंड के अधिकारी श्री थवासीलन ने अपने राज्य में नागालैंड स्वास्थ्य सुरक्षा सोसाइटी और मुख्यमंत्री स्वास्थ्य बीमा योजना के नवाचार को साझा किया। इनके माध्यम से वहां कैशलेस स्वास्थ्य बीमा सुविधा और राज्य से बाहर भी कैशलेस स्वास्थ्य बीमा लोगों को दिया जा रहा है। मध्यप्रदेश में राजस्व विभाग की उपायुक्त सुश्री अलका सिंह ने वहां फरवरी माह से शुरू किए गए साइबर तहसील संबंधी नवाचार से अधिकारियों को रू-ब-रू कराया। वहां 'संपदा' पोर्टल से जमीन की ऑनलाइन रजिस्ट्री और तत्काल नामांतरण किया जा रहा है। आधुनिक तकनीकों के उपयोग से राजस्व मामलों का त्वरित निराकरण किया जा रहा है। राज्य में लैंड रिकॉर्ड्स के डिजिटलाइजेशन के बाद 13 तहसीलदार 1364 राजस्व न्यायालय संचालित कर रहे हैं।

मालगांव में गुरुभक्तों ने दिगंबराचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज का 33वां संयम महोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया

नांदणी (विश्व परिवार)। मालगाव (महाराष्ट्र) के श्रावक श्री सुहास केरीमाने ने बताया कि मुझे प्रसन्नता है कि हमारे मालगाव नगर को आचार्य भगवन विशुद्ध सागर जी महाराज का 33वां मुनी दिक्षा दिवस मनाने का परम सौभाग्य हम सभी श्रावक श्राविकाओं को मिला है। धर्मनगरी मालगाव में चर्या शिरोमणी आचार्य विशुद्धसागर जी महाराज के शिष्य श्रमण मुनी श्री अनुत्तर सागर महाराज जी को मालगाव नगर की ओर से प्रशस्ती प्रदान की गयी।

मालगाव में विराजमान विचित्र बाते प्रणेता सर्वार्थ सागर महाराज जी के मार्गदर्शन से श्रमण संस्कृती के प्रमुख आचार्यो में से एक चर्या शिरोमणी दिगंबर जैन आचार्य 108 श्री विशुद्धसागर महाराज जी का 33 वां मुनी दिक्षा दिवस 21 नवम्बर को मालगाव (महाराष्ट्र) में शेकडो श्रावक श्राविकाओं की उपस्थिती में आचार्य श्री का गुणगान करके सभी गुरुभक्तोने श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

चर्या शिरोमणी आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज के शिष्य श्रमण मुनी श्री अनुत्तर सागर जी महाराज, श्रमण मुनी श्री प्रणेय सागर जी, श्रमण मुनी श्री प्रणव सागर जी, श्रमण मुनी श्री सर्वार्थ सागर जी, श्रमण मुनी श्री संकल्प सागर जी और श्रमण मुनी श्री सदभाव सागर जी महाराज जी का उपसंघ मालगाव (महाराष्ट्र) में विराजमान हैं। चर्या शिरोमणी आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज के शिष्य श्रमण मुनी श्री अनुत्तर सागर जी महाराज ने कहा की - प.पू. आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी ने अभि तक 1,25,000 कि.मी. पैदल विहार किया हैं। आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी की आध्यात्मिक अमृतमयी वाणी से निश्रित आगमिक धारा के परिणामस्वरूप 250 ग्रंथों की रचना और 5000 नितीकाव्य का लेखन किया हैं। आचार्य श्री

विशुद्ध सागर महाराज जी के सानिध्य में लागभग 146 पंचकल्याण प्रतिष्ठा महामहोत्सव सानंद संपन्न हुए हैं।

श्रमण मुनी श्री प्रणेय सागर जी बताया की आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज यथा नाम तथा गुण रुप है। जैसा नाम है, वैसा ही आचरण है। आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज को तत्वो का इतना गहन चिन्तवन है कि जिनवाणी उनके कण्ठ मे विराजमान रहती है। आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी के प्रवचन इतने सरल व स्यादवाद से भरे होते है। इनके प्रवचन मे स्यादवाद व अनेकान्त रुपी शस्त्र से मिथ्यात्व का शमन तो सहज ही झलकता है। आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी के बारे मे जितना कहे कम है। हे गुरुवर, आचार्य भगवन्त नमोस्तु शासन को सदा जयवतं रखे। मुनी श्री प्रणव सागर जी महाराज जी ने कहा की आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी के बचपन से प्रारंभिक क्रियायें उनके भविष्य में वैराग्य की और बढ़ते क़दमों का संकेत दे रही थी। बचपन से ही जिनालय जाना, विशुद्ध सागर महाराज जी अल्पायु से अपने पिता जी श्री रामनारायण जी एवं माता जी श्रीमती रत्ती देवी एवं अपने अग्रजों के साथ प्रतिदिन श्री जिन मंदिर जी दर्शनों के लिये जाने लगे थे।

श्रमण मुनी श्री सर्वार्थ सागर जी ने कहा की आचार्य भगवन प.पू. आध्यात्म योगी 108 श्री विशुद्ध सागर जी महाराज रात्रि भोजन एवं अभक्ष्य वस्तुओं का त्याग। वर्ष की अल्पायु में श्री जिनालय में रात्रि भोजन का त्याग एवं अभक्ष्य वस्तुओं के त्याग का नियम ले लिया था और उसका पालन भली प्रकार से किया। आचार्य विशुद्ध सागर जी द्वारा दीक्षित 56 युवा मुनि जो उच्च शिक्षित, प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी में निष्णात हैं। वह आपकी आंतरिक क्षमता - समता एवं सम्यक नीती-निपुणता का संदेश देते हैं।

श्री संकल्प सागर जी ने कहा की आचार्य श्री विशुधसागर महाराज जी ने जब वे 8 वर्ष के थे तभी से उन्होंने सप्त व्यसन का त्याग एवं अष्ट मूल गुणों का पालन करना प्रारंभ कर दिया था। 13 वर्ष की अल्पायु में तीर्थराज श्री दिगंबर जैन सिद्ध क्षेत्र शिखर जी में बिना देव दर्शन के भोजन न करने का नियम ले लिया था। श्रमण मुनी श्री सदभाव सागर जी ने बताया की आचार्य विशुद्ध सागर महाराज जी अल्पायु में अपने ग्राम रुर के जिनालय में भगवान् के समीप स्वयं ही ब्रहमचर्य व्रत ले लिया था। उन्होने अपने पिता जी माता जी एवं अनेक परिवार जनों के साथ बचपन से ही शिखर जी, सोनागिरी जी, एवं अनेक तीर्थ क्षेत्रों के दर्शन करने एवं वह विराजमान पूज्य महाराजों के दर्शन करना भी उनके वैराग्य का एक बिंदु है।

नांदणी के जिनसेन भट्टारक महास्वामी जी ने बताया की आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज बचपन से ही ग्रथों का अध्ययन करके उन पर मनन एवं चिंतन करते थे, जो उनके वैराग्य की और बढ़ने का एक माध्यम बना। आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी ने उत्तर से दक्षिण में आकार विशुद्ध ज्ञानगंगा प्रवाहीत की है। 1 जनवरी 2025 से 9 जनवरी 2025 तक नांदणी में पंचकल्याणक और महामस्तकाभिषेक संपन्न होनेवाला है उसमे सभी श्रावक - श्राविका संमिलीत हो ऐसा प. पू. जिनसेन स्वामीजी ने आव्हाहन किया।

मालगाव महाराष्ट्र में श्रमण संस्कृती के प्रमुख आचार्यों में से एक चर्या शिरोमणी दिगंबर जैन आचार्य 108 श्री विशुद्धसागर महाराज जी के 33 वां मुनि दिक्षा दिवस पर 33 अर्घ्य चढाकर आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी का 33 वां मुनी दिक्षा दिवस श्रावक श्राविकाओं ने श्रद्धापूर्वक मनाया।

मालगाव की कन्या और धार्मिक वक्ता कु. स्मिता केरीमाने जी को मुनी श्री प्रणेय सागर जी और मुनी श्री संकल्प सागर जी इन दो मुनीराजो द्वारा आशीर्वाद के रुप में ग्रंथ प्राप्त हुआ। गुरुभक्त केरीमाने परिवार हमेशा मुनीयों आहार देना, त्यागी व्रत्तीयों की सेवा करना, वैयावृत्ती करने में हमेशा तैयार रहता है। कु. स्मिता केरीमाने जी पर्युषण पर्व में वक्ता के रुप विविध नगरो में जाकर व्याख्यान करके जिनधर्म की प्रभावना करती है। नमोस्तु शासन जयवंत हो।

-अभिषेक अशोक पाटील

अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज कुलचाराम से बद्रीनाथ अहिंसा संस्कार पदयात्रा से

औरंगाबाद (विश्व परिवार)। यदि आप जानना चाहते हैं कि आपको कौन नियंत्रित करता है, तो आप आँख मूंदकर सोचें हम किसके बारे में गलत नहीं सोचते और यह भी जानो कि हम क्या नहीं जानते? जो नहीं जानते उसके बारे में जानने की शुरूआत आज से ही शुरू कर देना चाहिए।

मनुष्य का स्वभाव बन गया है कि मान्यताओं की खोज करना। किसी समूह की मान्यताओं से जुड़ने के बाद हमें लगता है कि हम सम्बद्ध हो गये और मान्यताओं की पहचान बन गये। और हम अपने आप को पूर्वाग्रहों की धारणाओं से मजबूत समझने लगते हैं। जबकि विनय, विवेक और विचारशील मनुष्यों की बुनियादी प्रवृति देखी गई है कि वे बनी-बनाई मान्यताओं पर आँख मूंदकर नहीं चलते। बल्कि उनके पद चिन्ह ऐसे आदर्श की मिसाल बन जाते हैं जो पन्थ का नहीं, पथ का मार्ग प्रशस्त करते हैं। आज जहाँ देखो पन्थवाद, सन्तवाद, सम्प्रदायवाद, पूर्वाग्रह, दुराग्रह, हटाग्रह से पीड़ित लोग धर्म की आड़ में इन सब विशेषणों को बेशरम के पेड़ की तरह लगाने और फैलाने में लगे हुये हैं। धर्म का मर्म अनन्त सुख है और पन्थवाद, सन्तवाद, सम्प्रदायवाद, का सुख आपकी एक श्वास रूकने तक का है। आप कहीं भी जाओ, अब धर्म की खुश्बू नहीं आती। बल्कि धर्म के नाम पर पूर्वाग्रह, दुराग्रह, हटाग्रह, सन्तवाद, पन्थवाद, सम्प्रदायवाद की बू आ रही है।

इसलिए धर्म अग्नि की तरह है- जो भी धर्म की शरण में आयेगा, उसके पाप का, दुराचार का, अनाचार का, व्यभिचार का दहन होगा ही होगा। धर्म पानी की तरह है- जो भी धर्म का पानी पीयेगा, धर्म उसकी प्यास बुझायेगा ही बुझायेगा। धर्म औषधी के समान है- जो धर्म की औषधी खाएगा, उसके जन्म मरण का नाश होगा ही होगा। धर्म एक ही है- अहिंसा, संयम, तप और दया। दिल्ली एक है - आने के मार्ग अलग-अलग है। अग्नि एक है- जो भी अग्नि में हाथ डालेगा, वो जलेगा ही जलेगा। **-नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल**

मुनि श्री समत्व सागर जी महाराज ने कहा- युवा पुरुषार्थ के साथ पुण्य भी कमाये

महामंडल में मनाया गया आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज का 33वां दीक्षा दिवस

जयपुर (विश्व परिवार)। सांगानेर थाना सर्किल स्थित चित्रकूट कॉलोनी में मुनि समत्व सागर महाराज ससंघ सानिध्य में चल रहे कल्पद्रुम महामंडल एवं विश्व शांति महायज्ञ में चौथे दिन श्रीमंडप भूमि मंडित अर्हत पूजा कर समोवशरण में विराजमान जिनेंद्र देव के समक्ष 75 अर्घ्य चढ़ाये गये। मंदिर समिति अध्यक्ष केवलचंद गंगवाल ने बताया कि महामण्डल विधान में पूजा अर्चना के साथ आचार्य विशुद्ध सागर महाराज का तेतीसवां दीक्षा दिवस बड़ी धूम धाम के साथ मनाया गया। मुनि समत्व सागर ने आचार्य विशुद्ध सागर के जीवन पर प्रकाश डालते हुये बताया कि आचार्य श्री ने सदैव कृत्यों व परिणामों की शुद्धता पर ज़ोर दिया है। इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से आचार्य श्री की पूजन कर नाचते गाते भक्ति करते हुए अर्घ्य चढ़ाये।

समिति मंत्री अनिल जैन काशीपुरा ने बताया कि धर्मसभा से पूर्व एक आह्वान पर समोवशरण में भक्तों ने सम चाँदी की बरसात सी कर दी। समाज श्रेष्ठी कपूर चंद अशोक बोहरा काशीपुरा परिवार ने सोने का कलश भेंट किया। कमलादेवी कैलाश चंद सौगानी परिवार चनानी ने चाँदी की पाण्डुकशिला दान की, महाआरती पुण्यार्जक गुणमाला सुनील बडजात्या लालसोट परिवार ने चाँदी का आरती का थाल दान किया। इसके अलावा श्रावकों ने सात चाँदी के सिंहासन भी भेट किए एवं सैकड़ो लोगो ने सौ सौ ग्राम चाँदी देने की घोषणा की। कुछ लोगो ने एक ग्राम, दो ग्राम, पाँच ग्राम सोना देने की भी घोषणा की है। उस समय ऐसा लग रहा था कि समोवशरण में सोने चाँदी की बरसात हो रही है। हर कोई अपनी श्रद्धा अनुसार दान दे रहा था। एडवोकेट महावीर सुरेन्द्र जैन के मुताबिक सुबह जल्दी ही विशेष पूजा अर्चना के साथ कल्प द्रुम मण्डल विधान की पूजा प्रारंभ हुई। श्री जी का अभिषेक कर वृहत शान्तिधारा करने का सौभाग्य समाज श्रेष्ठी प्रदीप कुमार विमल बाकलीवाल साँवरिया, रामचंद्र आशीष बैद परिवार ने प्राप्त किया। अंतरंग की विशुद्धता से फैलती यश और कीर्ति-मुनि समत्व सागर मुनि श्री ने प्रवचन करते हुये कहाँ कि गुरु की दृष्टि बहुत व्यापक होती है इसीलिए जीव को श्रेष्ठ बनना है तो अपने आप को गुरु चरणों में समर्पित कर देना चाहिए।

अब 3 घंटे से अधिक देरी वाली फ्लाइट होगी रद्द

नई दिल्ली (आरएनएस)। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने एयरलाइनों को निर्देश दिया है कि वे यात्रियों को किसी भी तरह की देरी की सूचना तुरंत दें और तीन घंटे से अधिक देरी वाली उड़ानों को रद्द करें, ताकि यात्रियों को असुविधा न हो। मंत्रालय का कहना है कि सर्दी बढ़ने के साथ घने कोहरे के कारण उड़ान बाधित होने की आशंका रहती है। नागरिक उड्डयन मंत्री के. राममोहन नायडू की अध्यक्षता में कोहरे की तैयारियों पर समीक्षा बैठक के बाद दिशा-निर्देश जारी किए गए। केंद्रीय मंत्री ने सुविधा और सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए 'उड़ान की सुगमता' के दृष्टिकोण के साथ यात्री-प्रथम दृष्टिकोण पर जोर दिया। एयरलाइनों को यह भी कहा गया है कि वे दिल्ली जैसे हवाई अड्डों पर परिचालन के लिए कैट अनुरूप विमान और प्रशिक्षित पायलटों का उपयोग करें, जहां सर्दियों के दौरान, विशेष रूप से दिसंबर में विजिबिलिटी कम होने की संभावना होती है। एयरलाइनों को असुविधा को कम करने के लिए पूरी तरह से स्टाफ वाले चेक-इन काउंटर बनाए रखने और संचार की सुविधा के लिए टिकट बुक करते समय यात्रियों की कॉन्टैक्ट डिटेल्स दर्ज करने का भी निर्देश दिया गया है।

जयकारो के साथ निकली घटयात्रा, कल्पद्रम महामंडल विधान का ध्वजारोहण के साथ शुभारंभ

धार्मिक अनुष्ठान में जीवन की कार्य प्रणाली का संविधान तय हो

भोपाल (विश्व परिवार)। केसरिया धर्म ध्वजा के साथ मस्तक पर मंगल कलश धारण कर मंगल गीत गा रही इंद्राणियां और छप्पन कुमारिया दिव्य घोष कि स्वर लहरियो में भक्ति में झूमे श्रद्धालु सत्य अहिंसा और जीव दया का संदेश देते हुए श्रावक मौका थाआचार्य विनम्र सागर महाराज के सा संघ में आयोजित कल्पद्रम महामंडल विधान विश्व शांति महायज्ञ के शुभारंभ का शंकराचार्य नगर मंदिर से निकली शोभायात्रा में आस्था की रंगों के साथ भक्ति की स्वर लहरियों का मिश्रण था प्रवक्ता अंशुल जेन ने बताया अनुष्ठान का शुभारंभ महेंद्र अजमेरा परिवार द्वारा ध्वजारोहण के साथ किया गया अनुष्ठान के मुख्य सौभाग्य शाली विशेष सहयोगी राजेश भारील्य मनोज इंजीनियर एम आर परिवार सहित आचार्य श्री को श्रीफल समर्पित कर आशीर्वाद लिया प्रतिष्ठाचार्य अविनाश भैया राजेश राज के निर्देशन में धार्मिक क्रियाएं विधि विधान से हुई मंत्र उच्चार के साथ पांडाल शुद्धि और पात्र शुद्धि की गई आचार्य श्री ने आशीष वचन में कहां धार्मिक अनुष्ठान जीवन जीने का संविधान तय करते हैं जैसे देश का संविधान तय होता है उसे आधार पर ही देश की कार्यप्रणाली संचालित होती है वैसे ही श्रावक के जीवन में संविधान तय होना चाहिए जिसमें संस्कृति और संस्कारों के शंखनाद के साथ तप त्याग त्याग संयम की साधना के साथ जीवन की दैनिक क्रिया होना चाहिए अंशुल जैन के अनुसार 1 दिसंबर को विश्व शांति महायज्ञ के साथ अनुष्ठान का समापन होगा। **-अंशुल जैन**

दिल्ली के भारत मंडपम में छत्तीसगढ़ दिवस पर डॉ. पुरुषोत्तम चंद्राकर कृत लोकरंजनी की हुई रंगारंग प्रस्तुति

दिल्ली में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने किया डॉ. पुरुषोत्तम चंद्राकर का सम्मान

रायपुर (विश्व परिवार)। दिल्ली के भारत मंडपम में चल रहे 43वें अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला में 20 नवंबर को छत्तीसगढ़ दिवस का आयोजन हुआ। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री मान. विष्णुदेव साय जी की गरिमामय उपस्थित रही। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और परंपरागत लोक नृत्यों की प्रस्तुति डॉक्टर पुरुषोत्तम चंद्राकर कृत लोकरंजनी लोककला सांस्कृतिक मंच द्वारा दी गई। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ दिवस हमारे राज्य की संस्कृति परंपराओं और प्रगति को देश-दुनिया के सामने पेश करने का अवसर है। यह विकसित छत्तीसगढ़ के सपने को साकार करने की दिशा में अहम कदम है।

विकसित छत्तीसगढ़ की झलक : इस वर्ष की थीम विकसित भारत 2047 को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ ने अपने स्टॉल और कार्यक्रमों को तैयार किया है मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जी के नेतृत्व में राज्य ने औद्योगिक निवेश रोजगार सृजन और आदिवासी क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण प्रगति की है इस आयोजन में राज्य की संस्कृति के साथ-साथ विकास के प्रयासों को भी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के सामने रखा।

पारंपरिक लोक नृत्य की विशेष प्रस्तुतियां : शाम 5:30 बजे से नई दिल्ली के एम्फी थिएटर-1 भारत मंडपम (हॉल नंबर 5 के सामने) लोकरंजनी लोक कला मंच डॉक्टर पुरुषोत्तम चंद्राकर कृत छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक कार्यक्रम गौरा- गौरी, भोजली, राउत नाचा, सुआ, , पंथी और कर्मा जैसे पारंपरिक लोक नृत्यों की शानदार प्रस्तुति दी गई। यह नृत्य छत्तीसगढ़ की लोक कला और सांस्कृतिक विविधता को जीवंत करेंगे गौर नृत्य की सामूहिक और भव्य प्रस्तुतियां गौरा - गौरी, की धार्मिक परंपरा सुआ नृत्य के भावपूर्ण गीत और राउत नाचा की ऊर्जा दर्शकों को छत्तीसगढ़ की जीवंत लोक परंपराओं से जोड़ेगी पंथी और करमा नृत्य अपनी आध्यात्मिकता और भक्ति भाव से कार्यक्रम में अलग रंग भरें।

छत्तीसगढ़ का पवेलियन विशेष आकर्षण का केंद्र : व्यापार मेले में छत्तीसगढ़ का पवेलियन इस बार विशेष आकर्षण का केंद्र बना हुआ है यहां ढोकरा कला, बस्तर की पारंपरिक कला और कोसा सिल्क जैसे पारंपरिक शिल्पो को प्रमुखता से प्रदर्शित किया गया है। इसके साथ ही राज्य के औद्योगिक उत्पादन हर्बल उत्पाद और ग्रामोद्योग की उपलब्धियां भी प्रदर्शनी का हिस्सा है। **-डॉ. पुरुषोत्तम चंद्राकर**

रायपुर पुलिस संगीत ग्रुप द्वारा श्रीमती चंपा दैवी इंदिरा देवी जैन चेरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से संगीत संध्या का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर पुलिस संगीत ग्रुप द्वारा श्रीमती चंपा देवी इंदिरा देवी जैन चेरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से संगीत संध्या का आयोजन किया गया कार्यक्रम में पुलिस विभाग के वरिष्ट अधिकारियों कर्मियों द्वारा मधुर गीतों की प्रस्तुति दी गयी जिससे दर्शकों का मन मोह लिया शाम 7 बजे से रात्रि 12 बजे तक यह आयोजन शहीद स्मारक भवन में रजबंधा मैदान में कय्य गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ शासन के उप मुख्य मंत्री श्री अरुण साव जी विशिष्ट अतिथि श्री संत कुमार पासवान रिटायर्ड पुलिस महा निर्देशक कार्यक्रम के आयोजक श्री कमलेश जैन श्रीमती चंपा देवी इंदिरा देवी जैन चेरिटेबल ट्रस्ट श्री ललित अग्रवाल श्री रामदास अग्रवाल रायपुर संगीत ग्रुप के संचालक श्री करुण सरोज जी सलाहकार श्री अतुल मिश्रा श्री शेखर राजपूत पीयूष जैन आदि उपस्थित थे। उक्त संगीत संध्या कार्यक्रम में श्री संजय देवस्थले डी एस पी श्री जावेद अंसारी एसपी शिवशंकर साहनी श्री धीरज मरकाम टी आई श्री करुण सरोज आदि ने मधुर गीतों की प्रस्तुति दी।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर शुक्रवार 22 नवंबर 2024

संक्षिप्त समाचार

कलेक्टर ने जिला शहरी विकास अभिकरण की ली बैठक

बालोद(विश्व परिवार)। कलेक्टर इन्द्रजीत सिंह चन्द्रवाल ने आज सयुंक्त जिला कार्यालय सभाकक्ष में जिला शहरी विकास अभिकरण की बैठक लेकर जिले के सभी नगरीय निकायों में चल रहे निर्माण कार्यों की प्रगति, राजस्व वसूली, प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी, जल प्रदाय योजना, प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना, मुख्यमंत्री स्लम स्वास्थ्य योजना शहरी क्षेत्रों में सॉलिड एवं लिक्विड वेस्ट मैनेजमेंट आदि कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने नगरीय निकायवार अधोसंरचना मद, राज्य प्रवर्तित एवं केन्द्र प्रवर्तित योजना अंतर्गत स्वीकृत निर्माण कार्यों की अद्यतन स्थिति की समीक्षा की। इसके अलावा उन्होंने नगरीय निकायवार कर संग्रहण की स्थिति, प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी की प्रगति की भी समीक्षा की। उन्होंने प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के कार्यों की समीक्षा करते हुए इसके अंतर्गत नगरीय निकायवार प्राप्त लक्ष्य, पात्र आवेदन पत्रों की संख्या, स्वीकृत एवं लंबित आवेदनों की संख्या आदि के बारे में जानकारी ली। मुख्यमंत्री स्लम स्वास्थ्य योजना के कार्यों की समीक्षा करते हुए नगरीय निकायवार एमएमयू संचालित वाहनों की संख्या, उपचार हेतु आवेदित शिविरों की संख्या तथा कुल उपचारित मरीजों की संख्या के अलावा दवा वितरण से लाभान्वित मरीजों की संख्या के बारे में जानकारी ली। बैठक में श्री चन्द्रवाल ने जिले के सभी नगरीय निकायों में आगामी नगरीय निकाय निर्वाचन के तैयारियों की भी समीक्षा की। बैठक में मुख्य नगर पालिका अधिकारियों के अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

नशा मुक्त भारत अभियान की समीक्षा बैठक संपन्न, ड्रग्स पर कार्रवाई तेज करने के निर्देश

सुकमा(विश्व परिवार)। जिला मुख्यालय के कलेक्ट्रेट कार्यालय के सभाकक्ष में नार्को कॉर्डिनेशन सेंटर (एनसीओआरडी) और नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रभारी सचिव श्री नरेंद्र दुग्गा ने की। बैठक में सुकमा जिले में नशा मुक्त भारत अभियान के तहत जनजागरूकता के लिए किए जा रहे कार्यों की सराहना की गई। श्री दुग्गा ने रोस्टर के अनुसार विभिन्न गतिविधियों को व्यवस्थित रूप से आयोजित करने के निर्देश दिए। प्रभारी सचिव ने पुलिस विभाग को ड्रग्स तस्करी के मामलों में सख्त कार्रवाई करने और ड्रग्स के ट्रैफिकिंग पर नियंत्रण के लिए विशेष प्रयास करने का निर्देश दिया। इसके साथ ही, विद्यालयों के 200 मीटर के भीतर तंबाकू उत्पाद बेचने वालों पर कोटपा एक्ट के तहत सख्त कार्रवाई करने की बात कही। आश्रम और आवासीय विद्यालयों में बच्चों के हॉस्टल रूम की आकस्मिक जांच के लिए भी निर्देश जारी किए गए, ताकि बच्चों को सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण प्रदान किया जा सके।

मारपीट, चाकूबाजी का आरोपी पहुंचा जेल

राजनादगांव(विश्व परिवार)। प्रार्थी कृष्णा रजक पिता जोहन रजक उम्र वर्ष निवासी कैलाश नगर राजनांदगांव का दिनांक 13.10.2024 को थाना आकर रिपोर्ट दर्ज कराया कि रात्रि 19:00 से 19:30 बजे के मध्य घटना स्थल कैलाश नगर में दुर्गेश टेलर के पास राजनांदगांव पीटर, सन्नी, राहुल निवासी कंचनबाग राजनांदगांव द्वारा पुरानी रंजिश पर से मां बहन की गाली गुप्तार कर जान से मारने की धमकी देकर हाथ मुक्का एवं धारदार चाकु से मारपीट कर चोट पहुंचाना बताया। कि रिपोर्ट पर आरोपियों के खिलाफ अपराध क्रमांक 663/24 धारा 296, 118 (1), 351 (2), 3 (5) भारतीय न्याय संहिता कायम कर वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया गया। पुलिस अधीक्षक राजनादगांव मोहित गर्ग के निर्देश एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा तथा नगर पुलिस अधीक्षक पुष्पेन्द्र नायक राजनादगांव के मार्गदर्शन एवं थाना प्रभारी निरीक्षक संजय बरेठ के नेतृत्व मे थाना कोतवाली स्टॉफ एवं सायबर सेल राजनांदगांव की सयुक्त टीम गठित कर आरोपियों की लगातार पतासाजी किया जा रहा था। कि आज दिनांक 19.11.2024 को मुखबीर की सूचना पर आरोपी राहुल भट्ट पिता स्व0 संतोष भट्ट उम्र 20 वर्ष साकिन कंचनबाग राजनांदगांव थाना कोतवाली जिला राजनांदगांव छ0ग0 को घेराबंदी कर पकड़े। पूछताछ पर पीटर एवं सन्नी के साथ मिलकर अपराध करना स्वीकार किया गया। तथा पीटर एवं सन्नी द्वारा प्रार्थी को चाकु से मारपीट करना बताया। आरोपी के खिलाफ अपराध सबूत पाये जाने से विधिवत गिरफ्तार न्यायिक रिमांड पर न्यायालय पेश किया गया, जेल वारंट प्राप्त होने पर जिला जेल राजनांदगांव में दाखिल किया गया। प्रकरण में 02 आरोपी पीटर एवं सन्नी घटना के बाद से फरार है, जिसे शीघ्र गिरफ्तार कर लिया जावेगा। उपरोक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी कोतवाली निरीक्षक संजय बरेठ, प्र0आर0 शम्भूनाथ द्विवेदी, जी0सिरील कुमार, आरक्षक भुनेश्वर जायसी तथा सायबर सेल राजनांदगांव से प्र0आर0 अनित शुक्ला आरक्षक अविनाश झा एवं थाना स्टाफ की सराहनीय भूमिका रही।

कलेक्टर ने धान उपार्जन केन्द्र का किया औचक निरीक्षण

धान उपार्जन केन्द्र में कोचियों एवं बिचौलियों से अवैध धान की खरीदी-बिक्री होने पर होगी कड़ी कार्रवाई

नोडल अधिकारी प्रतिदिन धान उपार्जन केन्द्रों में करें भौतिक सत्यापन

रकबा समर्पण करने की कार्रवाई सुनिश्चित करें

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। खरीफ विवपण वर्ष 2024-25 के तहत समर्थन मूल्य पर जिले में धान खरीदी का कार्य तेजी से चल रहा है। धान उपार्जन केन्द्रों में विक्रय करने वाले किसानों के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई है और इस कार्य की सतत निगरानी के लिए नोडल अधिकारी भी नियुक्त किए गए हैं। इन नोडल अधिकारियों द्वारा धान उपार्जन केन्द्र का सतत भ्रमण कर केन्द्र में उपलब्ध धान और बारदानों का सत्यापन भी किया जा रहा है। इसी तारतम्य में कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल ने आज जिले के डोंगरगांव विकासखंड के धान उपार्जन केन्द्र तुमड़ीबोड़, कोहका और तेन्दूनाला का औचक निरीक्षण किया। कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल ने समिति प्रबंधकों से धान खरीदी केन्द्र में कांटा-बांट, नामतौल, बारदाना, कम्प्यूटर सेट, प्रिंटर, रखरखाव, पेयजल, स्वास्थ्य किट, छांव, शौचालय, बायोमेट्रिक डिवाईस मशीन, मानव संसाधन सहित अन्य व्यवस्थाओं के साथ-साथ आर्द्रतामापी यंत्र के संबंध में जानकारी ली। कलेक्टर ने धान उपार्जन केन्द्र तुमड़ीबोड़ पहुंचकर धान विक्रय के लिए उपस्थित किसानों से चर्चा कर प्रशासन द्वारा द्वारा उपलब्ध कराई गई सुविधाओं के संबंध में जानकारी ली। किसानों ने बताया कि इस वर्ष कई स्थानों पर माहो कीट इत्यादि लगने के कारण उत्पादन में कुछ कमी आई है। कलेक्टर ने कहा कि किसान इन उपार्जन केन्द्रों में अपने वास्तविक उपज का विक्रय सुनिश्चित करें। उन्होंने समिति प्रबंधक को कहा कि धान उपार्जन केन्द्र में किसी भी कोचियों एवं बिचौलियों से अवैध धान की खरीदी-बिक्री नहीं होनी चाहिए। ऐसा होने पर सख्त कार्रवाई करने के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया है। उन्होंने धान उपार्जन केन्द्र में महिलाओं कृषकों के लिए अस्थाई शौचालय बनाने के निर्देश दिए। ग्राम बाकल के कृषक श्री टोकेश्वर साहू एवं श्री कौशल ने बताया कि समय पर उनका धान तौलाई कर लिया गया है। इस दौरान समिति प्रबंधक ने बताया कि अब तक इस केन्द्र में 5 हजार क्विंटल से अधिक धान की खरीदी की जा चुकी है और आज 39 किसानों का टोकन वितरित किया गया है, जो आज धान विक्रय करेंगे। धान उपार्जन केन्द्र के लिए नियुक्त नोडल अधिकारी श्री वीके गणवीर को प्रतिदिन भौतिक सत्यापन के निर्देश दिए हैं।

सारंगढ़-प्रार्थना सभा की आड़ में धर्मांतरण स्टिंग ऑपरेशन में हुआ भंडाफोड़

सारंगढ़ बिलाईगढ़(विश्व परिवार)। प्रार्थना सभा की आड़ में महिलाओं और बच्चों का धर्मांतरण किए जाने मामला एक बार फिर सामने आया है,जहां सर्व हिंदू समाज के सदस्यों ने स्टिंग ऑपरेशन कर भंडाफोड़ किया,मौके से बड़ी तादाद में ईसाई धर्म का साहित्य बरामद किया गया है। मामला छत्तीसगढ़ के सारंगढ़ बिलाईगढ़ ज़िले के वार्ड क्रमांक 6 सहसपुर का है,जहां ईसाई समाज के द्वारा महिलाओं और बच्चों को धर्मांतरण की ओर धकेलने का कार्य करते पास्टरों को पकड़ा गया दरअसल सर्व हिन्दू समाज के सदस्यों को इस इलाके में प्रार्थना सभा की आड़ में धर्म परिवर्तन किए जाने की भनक लगी। धर्म परिवर्तन कराने वाला पादरी अपने लोगों के जरिए चुन-चुनकर घरों की पहचान कराता और फिर धार्मिक अनुष्ठान के नाम पर लोगों को ईसाई बनाता। धर्म परिवर्तन के लिए ये पादरी रुपयों का भी लालच देता था। रविवार को जब एक घर में प्रार्थना करने इक्कठा होने लगे तब सर्व हिन्दू समाज से सतीश यादव ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर ने पहले तो प्रार्थना घर से बाहर निकल रही महिलाओं से कहा कि हमें भी परेशानी है,हमें भी अपनी परेशानी दूर करनी है इसलिए हमें जानना है कि यहां किस तरह परेशानी दूर करनी है,कहते हुए स्टिंग ऑपरेशन किया जहां चल रहे माजरे को अपने कैमरे में कैद करने की कोशिश की,घर में ईसाई मिशनरी से जुड़े कई लोग मौजूद थे,जो सफेद शर्ट व काली पैंट पहने थे। सर्व हिंदू समाज के लोगों ने पूछताछ की तो किसी महिला ने बताया कि उनके बच्चे की तबीयत खराब रहती थी ठीक होने पर प्रार्थना कर रहे थे। किसी महिला ने घर की परेशानी दूर होने पर सभा में शामिल होने की बात कही। एक महिला अपने पति की शराब छुड़ाने को लेकर वहां पहुंची थी। दुर्गा वाहिनी की अनुपम केसरवानी, दिशा यादव एवं सतीश यादव ने थाने में जानकारी दी कि के एक मकान में मतांतरण की कोशिश चल रही हैं, वहां 50 से ज्यादा लोग जुटे हुए हैं। हिंदू समाज मौके पर पहुंचा तो, चंगाई सभा (यीशु की प्रार्थना) चल रही थी। इसमें कई लोग सरकारी कर्मचारी हैं।बहरहाल पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है,अब देखना यह होगा कि इस पर क्या कार्रवाई की जाती है इससे पूर्व 11नवंबर को भी सारंगढ़ के ग्राम पंचायत बेगीनडीह में धर्मांतरण का मामला सामने आया था। ग्रामीणों की सूचना के आधार पर सर्व हिंदू समाज के द्वारा धर्म परिवर्तन हो रहे।

जिले में अवैध धान के चार प्रकरणों पर कार्यवाही करते हुए 132 क्विंटल धान किया गया जब्त

बालोद(विश्व परिवार)। जिले में खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी हेतु गत् वर्ष की भांति समितियों अंतर्गत स्थापित 143 धान खरीदी केन्द्रों के माध्यम से की जा रही है। अब तक 7433 किसानों से कुल 29135.80 मेट्रिक टन धान की खरीदी की जा चुकी है। उन्होने बताया कि सभी उपार्जन केन्द्रों में धान की खरीदी सुचारू रूप से की जा रही है। शासन के निर्देशानुसार सभी खरीदी केन्द्रों का सतत् निरीक्षण किया जा रहा है। जो किसान अपना संपूर्ण धान विक्रय कर लिए है। उनसे सहमति उपरांत उनके शेष धान के रकबे का रकबा समर्पण की कार्यवाही करते हुए उनका शेष रकबे को लॉक किया जा रहा है। जिससे की कोई भी कोचिया या व्यापारी उनके शेष रकबे पर अपना धान का विक्रय ना कर सके। जिला खाद्य अधिकारी ने बताया कि राजस्व, खाद्य, मंडी एवं सहकारिता विभाग का संयुक्त जांच दल गठन किया गया है, जो कोचिया एवं व्यापारियों के प्रतिष्ठानो में जांच कर रहे है। उन्होने बताया कि 19 नवंबर 2024 की स्थिति में ग्राम डढारी के सुरेश कुमार साहू से 40 क्विंटल धान, ग्राम कुसुमकसा के कृपाराम सिन्हा से 36.80 क्विंटल धान, ग्राम गुजरा के नरेश कुमार भुआर्य से 31.20 क्विंटल धान, ग्राम मड़ियाकट्टा के पुरानिक राम सोरी से 24 क्विंटल धान कुल 04 प्रकरण अंतर्गत 132 क्विंटल धान जप्ती की कार्यवाही की गई है। जिला खाद्य अधिकारी ने अपने पजीकृत रकबे में संपूर्ण धान का विक्रय करने वाले किसानों से अनुरोध किया है कि वे अपने द्वारा उत्पादित धान का विक्रय समर्थन मूल्य पर करने के उपरांत यदि कुछ रकबा शेष बच रहा है, उसे समर्पण करते हुए शेष रकबे को लॉक करवा ले जिससे उनके शेष रकबे पर फर्जी खरीदी या कोई भी कोचिया या व्यापारी अपना धान विक्रय न कर सके ।

संभाग आयुक्त ने धान खरीदी केन्द्र लाटाबोड़ का किया निरीक्षण

बालोद(विश्व परिवार)। संभाग आयुक्त सत्य नारायण राठौर ने मंगलवार 19 नवंबर को बालोद विकासखण्ड के धान खरीदी केन्द्र लाटाबोड़ का निरीक्षण व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने मौके पर उपस्थित अधिकारियों को धान खरीदी केन्द्र में केवल गुणवत्तायुक्त धान की ही खरीदी करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही उन्होंने अधिकारियों को धान खरीदी केन्द्र में निर्माणाधीन किसान कुटीर के निर्माण कार्य को शीघ्र पूरा कराने के भी निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को धान खरीदी केन्द्र में किसानों के लिए बैठक एवं छांव इत्यादि की व्यवस्था के अलावा शुद्ध पेयजल, शौचालय आदि सभी व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा। उन्होंने अधिकारी-कर्मचारियों को धान खरीदी केन्द्रों में धान की अवैध बिक्री की रोकथाम हेतु पुख्ता उपाय सुनिश्चित करने तथा धान की अवैध बिक्री की शिकायत पाए जाने पर कड़ी कार्रवाई की भी चेतावनी दी। इस दौरान एसडीएम प्रतिमा ठाकरे झा, तहसीलदार आशुतोष शर्मा सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

जल जतन अभियान को सफल बनाने में आम जनता की सहभागिता सुनिश्चित करें - कलेक्टर इन्द्रजीत सिंह

अधिकारियों की बैठक लेकर जिले में अभियान की प्रगति की समीक्षा की

बालोद(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री इन्द्रजीत सिंह चन्द्रवाल ने जल प्रबंधन द्वारा जल संरक्षण के प्रति आम जनता में जागृति उत्पन्न करने के उद्देश्य से जिले में चलाए जा रहे 'जल जतन अभियान' को सफल बनाने हेतु इस अभियान में आम जनता की भागीदारी सुनिश्चित करने को कहा है। जिससे कि भविष्य में जिले में जल संकट की स्थिति निर्मित न हो सके एवं घटते जल स्तर को रोकने हेतु प्रभावी उपाय सुनिश्चित की जा सके। कलेक्टर श्री चन्द्रवाल आज संयुक्त जिला कार्यालय सभाकक्ष में आयोजित जिले में 'जल जतन अभियान' के कार्यों की प्रगति की बैठक में संबंधित विभाग के अधिकारियों को उक्ताशय के निर्देश दिए हैं। बैठक में जिले में 'जल जतन अभियान' को सफल बनाने हेतु विभिन्न विभागों द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की। श्री चन्द्रवाल ने इस अभियान में स्थानीय जनप्रतिनिधियों की भी अनिवार्य भागीदारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. संजय कन्नौजे, जल संसाधन विभाग के कार्यपालन अभियंता श्री पीयूष देवांगन, उप संचालक कृषि श्री जीएस धुर्वे, कार्यपालन अभियंता ग्रामीण यांत्रिकी सेवा सहित संबंधित विभाग के अधिकारीगण उपस्थित थे। बैठक में श्री चन्द्रवाल ने कृषकों को जागरूक करने हेतु जिले के विभिन्न स्थानों में लगाए गए जन चैपालों की भी समीक्षा की। उन्होंने निर्धारित स्थानों पर जन चैपाल लगाकर किसानों को ग्रीष्मकालीन धान के बदले गन्ना, गेंहूँ, मक्का, चना, दलहन, तिलहन एवं शाक-सब्जी का उत्पादन के लिए प्रेरित करने को कहा। उन्होंने कृषि विभाग के अधिकारियों को इन फसलों के लिए किसानों को समुचित मात्रा में बीज उपलब्ध कराने तथा इसकी उत्पादनों की बिक्री के व्यवस्था के संबंध में भी जानकारी ली। उन्होंने आम जनता को 'जल जतन अभियान' के संबंध में जानकारी प्रदान करने हेतु साप्ताहिक हाट-बाजार, मेला-मड़ाई आदि में विभिन्न प्रकार की गतिविधियां आयोजित करने के निर्देश दिए हैं। उल्लेखनीय है कि सेंट्रल ग्राउण्ड वाटर बोर्ड के रिपोर्ट के अनुसार जिले के विकासखण्ड गुरूर को क्रिटिकल जोन में रखा गया है।

नियद नेल्लानार योजना के लिए सर्वे कार्य को दस दिन में पूर्ण करें : कलेक्टर

जगदलपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर हरिस एस ने नियद नेल्लानार योजना के फिजिकल सर्वे एवं आनलाईन रिपोर्ट की स्थिति की समीक्षा किए। उन्होंने एक्सल सीट पर सर्वे रिपोर्ट तैयार करते हुए सर्वे कार्य को 10 दिन में पूर्ण करने के निर्देश दिए। साथ ही सभी योजनाओं के हितग्राहियों की जानकारी के साथ उनके आधार कार्ड, आयुष्मान कार्ड, बैंक खाता की जानकारी एकत्र करने कहा। कलेक्टर हरिस मंगलवार की दोपहर को जिला कार्यालय के प्रेरणा सभाकक्ष में समय सीमा की बैठक लेकर अधिकारियों को निर्देशित किए। बैठक में मुख्यमंत्री जनदर्शन के लंबित प्रकरणों पर चर्चा कर संबंधित विभागों अधिकारियों को प्रकरणों का निराकरण एक सप्ताह में करवाने के निर्देश दिए। उन्होंने विभागीय कार्यों की समीक्षा के दौरान खाद्य विभाग खाद्यान्न भण्डारण में शक्कर, गुड़ की भण्डारण को प्राथमिकता से करते हुए सभी उचित मूल्य की दुकानों में किसी भी स्थिति माह के 10 तारीख तक सभी भण्डारण पूर्ण करवाने कहा। उचित मूल्य की दुकानों में खाद्यान्न भण्डारण हेतु राशि जमा की जानकारी की समीक्षा की और ग्राम पंचायत द्वारा संचालित दुकानों को चिन्हांकित कर अन्य स्व-सहायता समूह को दिलाने की पहल करने के लिए कहा। उन्होंने धान खरीदी के लिए पीडीएस बारदाना संकलन का लक्ष्य व उपलब्धता के संबंध में संबंधित अधिकारियों से चर्चा किए। इसके साथ ही सभी एसडीएम उनके अनुभाग में संचालित समिति के माध्यम से पीडीएस बारदाना की उलब्धता रिपोर्ट करेंगे। कलेक्टर ने धान खरीदी केंद्रों में फसल कटाई प्रयोग की रिपोर्ट के आधार पर धान खरीदी की जांच करवाने तथा ज्यादा धान खरीदी वाले केंद्रों के किसानों का खसरा सत्यापन करवाने के निर्देश दिए।साथ ही जाँच नाका में अवैध धान पर कार्यवाही करेंगे। बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना की प्रगति,स्थाई प्रतिक्षा सूची, आवास प्लस में शामिल परिवारों की प्रगति, प्रथम किस्त प्राप्त उपरांत आवासों की भौतिक प्रगति,स्वच्छ भारत मिशन के कार्य, सामुदायिक शौचालय निर्माण व सेग्रीगेशन शेड निर्माण कार्य की प्रगति की समीक्षा किया गया। एनआरएलएम बैंक लिंकेज, ब्लाक वार प्रगति रिपोर्ट इंटरप्राईज फांयनेंस में ऋण के आवेदन पर रिजेक्शन के कारण की वजह पर लीड बैंक अधिकारी को आवश्यक कार्यवाही करने कहा। इसके अलावा मनरेगा अंतर्गत आंगनबाड़ी भवनों और पीडीएस भवन की भौतिक प्रगति की समीक्षा, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजनांतर्गत आधार सिंडिग एवं लैड सिंडिग की प्रगति, जल जीवन मिशन के कार्य, हर घर जल, आत्म समर्पित नक्सलियों के पुनर्वास से संबंधित योजनाओं से लाभांवित करने तथा नक्सल पीड़ित व्यक्तियों परिवारों को पात्रता के आधार पर योजनाओं से लाभांवित करने पर चर्चा किया गया। कलेक्टर ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजनांतर्गत ट्राइल बेस पर एक गांव को टारगेट का सेचुरेंट कर आधार सिंडिग करने के निर्देश दिए।उन्होंने स्कूली शिक्षा विभाग से जाति प्रमाण पत्र निवास प्रमाण पत्र दो सप्ताह में सम्पूर्ण आवेदन को तहसील कार्यालय में जमा करवाने के निर्देश दिए। आयुष्मान कार्ड के लिए चार गांव का लक्ष्य कर सेचुरेशन करने के लिए शिविर आयोजन की समीक्षा किए, साथ ही शिविर में आधार कार्ड अपडेट भी साथ में करवाने कहा।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर शुक्रवार 22 नवंबर 2024

व्यापार समाचार

भारत में OPPO Find X8 सीरीज़ लॉन्च हुई: अत्याधुनिक इनोवेशन के साथ फ्लैगशिप एक्सिलेंस पेश की गई

रायपुर। आज OPPO India ने भारत में OPPO Find X8 सीरीज़ का लॉन्च किया। OPPO की इनोवेशन की विरासत को आगे बढ़ाते हुए Find X8 सीरीज़ में फ्लैगशिप मीडियाटेक डायमेंसिटी 9400 SoC, दो टेलीफोटो लेंस के साथ क्वाड-कैमरा सेट-अप, हाई डेंसिटी क्विक चार्जिंग सिलिकॉन कार्बाईड बैटरी, और ColorOS 15(एंड्रॉयड 15 पर आधारित) जैसी खूबियाँ हैं। इसमें IP68 और IP69 रेटेड टिकाऊ और लाईटवेट बिल्ड के साथ फोटोग्राफी और Pro डक्टिविटी में सुधार के लिए अनेक AI फीचर्स दिए गए हैं। इस सीरीज़ में Find X8 Pro का मूल्य 16GB RAM + 512GB स्टोरेज के लिए INR 99,999 रुपये है। स्टैंडर्ड Find X8 दो स्टोरेज वैरिएंट्स 12GB + 256GB के लिए INR 69,999 रुपये और 16GB RAM + 512GB के लिए INR 79,999 रुपये में उपलब्ध है। ये सभी डिवाईस 3 दिसंबर से OPPO e-store, Flipkart एवं अन्य रिटेल आउटलेट्स से प्रि-ऑर्डर की जा सकेंगी। Pete Lau, SVP and Chief Product Officer, OPPO ने कहा, "OPPO की Find X8 सीरीज़ ने स्मार्टफोन की सीमाएं बढ़ा दी हैं। Find X8 और Find X8 Pro में अत्याधुनिक इंजीनियरिंग और Pro फेशनल फोटोग्राफी के लिए अल्ट्रा-ग्रेड कैमरा, अल्ट्रा-लॉंग लाइफ बैटरी लाइफ औरअल्ट्रा-पॉवरफुल परफॉरमेंस का बेहतरीन मिश्रण है। ताकि भारी कामों को भी आसानी से संभाला जा सके। इन सभी आधुनिक फीचर्स और OPPO AI तथा ColorOS 15 के शानदार तालमेल ने दैनिक कामों को बहुत सुगम और आसान बना दिया है। हमारे और औद्योगिक नेतृत्वकर्ताओं के सहयोग के साथ Find X8 सीरीज़ सर्वश्रेष्ठ टेक्नोलॉजी और क्राफ़्ट्समैनशिप का प्रतिनिधित्वकरती है। इन इनोवेशंस के साथ Find X8 सीरीज़ स्मार्टफोन की उत्कृष्टता में विश्व के नए मानक स्थापित कर रही है। इसने यूज़र्स द्वारा अपनी डिवाइस से अपेक्षाओं के नए मानक स्थापित कर दिए हैं।

सीआईईएल एचआर सर्विसेज लिमिटेड ने आईपीओ के लिए सेबी के पास दाखिल किया डीआरएचपी

सीआईईएल एचआर सर्विसेज लिमिटेड ने आरंभिक सार्वजनिक पेशकश (आईपीओ) के लिए सेबी के पास ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया है। सीआईईएल एचआर सर्विसेज लिमिटेड भारत की एकमात्र कंपनी है जो कर्मचारी जीवनचक्र के हर हिस्से को प्रभावित करने वाली संपूर्ण मानव संसाधन श्रृंखला में प्रौद्योगिकी-संचालित मानव संसाधन समाधानों का एक व्यापक सूट प्रदान करती है। (30 जून, 2024 तक स्रोत: एफ्एंडएस रिपोर्ट) आईपीओ में 335 करोड़ रुपये तक के इक्विटी शेयरों का एक नया इश्यू और विक्रय शेयरधारकों द्वारा 4,739,336 इक्विटी शेयरों ('प्रस्तावित शेयर') की बिक्री के लिए एक प्रस्ताव (ओएफ्एस) शामिल है, जिसका अंकित मूल्य ?2 प्रत्येक इक्विटी शेयर है। सीआईईएल एचआर को पंडियाराजन करुप्पासामी (सीआईईएल एचआर ग्रुप के अध्यक्ष और कार्यकारी निदेशक) प्रमोट करते हैं। प्रवर्तक अध्यक्ष पंडियाराजन करुप्पासामी और प्रवर्तक निदेशक हेमलता राजन मा फ़ेई मैनेजमेंट कंसल्टेंट्स प्राइवेट लिमिटेड (पूर्ववर्ती मा फ़ेई) के मूल प्रवर्तक थे, यह एक एचआर कंपनी थी जिसे बाद में एक वैश्विक स्टाफ़िंग कंपनी द्वारा अधिग्रहित कर लिया गया। 4,739,336 इक्विटी शेयरों तक की बिक्री के प्रस्ताव में पंडियाराजन करुप्पासामी द्वारा कुल 2,544,181 इक्विटी शेयर शामिल हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आईसीए वैश्विक सहकारी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 का शुभारंभ करेंगे

नई दिल्ली: भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 का शुभारंभ करेंगे। इसकी घोषणा सहकारी संस्था इफ्को, भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालयऔर अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में की गई। वैश्विक सहकारी आंदोलन के लिए प्रमुख निकाय, अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (आईसीए) के 130 साल के लंबे इतिहास में पहली बारइफ्को की पहल परआईसीए महासभा और वैश्विक सहकारी सम्मेलन की मेजबानी भारत द्वारा की जाएगी। भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय के सचिव डॉ. आशीष कुमार भूटानी ने बताया किभारत सरकार के माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह 25 नवंबर 2024 को दोपहर 3 बजे अपनी गरिमामयी उपस्थिति से इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएंगे। वे मुख्य अतिथि के रूप में वैश्विक सहकारी सम्मेलन के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करेंगे। इस कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष ङ्क 2025 पर एक स्मारक डाक टिकट भी जारी किया जाएगा। इफ्को लिमिटेड के प्रबंध निदेशक डॉ उदय शंकर अवस्थी ने प्रेस को बताया कि भूटान के माननीय प्रधानमंत्री महामहिम दाशो शेरिंग तोबगे जी और फ्रिज़ी के माननीय उप प्रधानमंत्री महामहिम मनोआ कामिकामिका भी सम्मानित अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम में शामिल होंगे। उन्होंने यह भी बताया कि यह कार्यक्रम 25 नवंबर से 30 नवंबर 2024 तक भारत मंडपम, आईटीपीओ, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस आयोजन का विषय होगा 'सहकारिता से सभी की समृद्धि का निर्माण' और उप-विषय होंगे।

* सक्षम नीति और उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र
* सभी के लिए समृद्धि बनाने को उद्देश्यपूर्ण नेतृत्व का पोषण
* सहकारी पहचान की पुष्टि
* भविष्य को आकार देना: 21वीं सदी में सभी के लिए समृद्धि का एहसास करना।

सहकारिता मंत्रालय के सचिव डॉ. आशीष कुमार भूटानी ने प्रेस को बताया कि इस आयोजन का विषय 'सहकारिता से सभी की समृद्धि का निर्माण' भारत सरकार के नारे 'सहकार से समृद्धि' के अनुरूप है, जिसका सही अर्थ है 'सहकारिता के माध्यम से समृद्धि'। अलग सहकारिता मंत्रालय के गठन और श्री अमित शाह के पहले केंद्रीय सहकारिता मंत्री के रूप में कार्यभार संभालने के साथभारतीय सहकारी क्षेत्र ने सहकारी आंदोलन के विकास और वृद्धि के लिए 54 बड़ीपहलों को शुरू करके राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में अधिक योगदान प्राप्त करते हुए नई उपलब्धियां हासिल की हैं।

विराट कोहली अपने खेलने के तरीके को लेकर जुनूनी हैं : रिकी पोंटिंग

पर्थ(एजेंसी)। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच होने वाली बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले, रिकी पोंटिंग ने विराट कोहली की जमकर तारीफ की है। उन्होंने कहा कि कोहली एक महान क्रिकेटर हैं और खेल के प्रति बेहद भावुक हैं। इसी वजह से ऑस्ट्रेलिया में भी उन्हें बहुत सम्मान मिलता है। पोंटिंग ने आईसीसी रिव्यू पर कहा, कोहली एक स्टार हैं, एक सुपरस्टार हैं। वह काफी समय से खेल के सुपरस्टार रहे हैं। वह जिस तरह से खेलते हैं, उसके प्रति बहुत भावुक हैं। वह अपनी टीम के प्रति भी बहुत भावुक हैं। वह जीतना चाहते हैं और दिल से खेलते हैं। ऐसे ही सुपरस्टार खिलाड़ी दुनिया भर में उत्साह पैदा करते हैं। स्टीव स्मिथ जब इंग्लैंड जाते हैं तो उन्हें स्टेडियम में आते ही लोग सीटी बजाते हैं। ये सब अंतर्राष्ट्रीय खेलों का हिस्सा है। हालांकि, इस साल कोहली का टेस्ट मैचों में औसत सिर्फ 22.72 रहा है, जो उनके ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट औसत 54.08 और करियर औसत 47.83 से काफी कम है। लेकिन ऑस्ट्रेलिया में कई शानदार शतक लगाने के बाद, उम्मीद है कि वह आगामी 5 मैचों की सीरीज में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। पोंटिंग ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि कोहली ऑस्ट्रेलिया दौरे पर भारतीय टीम के लिए बल्लेबाजी का दारोमदार संभालेंगे। उन्होंने कहा, मैंने देखा था कि रवि शास्त्री ने पिछली बार एक ऐसे इंसान के बारे में बात की थी जो ऑस्ट्रेलिया में सभी गेंदों का सामना करना चाहता था। यही आप अपने लीडर और स्टार खिलाड़ियों से उम्मीद करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि जब आप विदेश जाते हैं और जानते हैं कि पूरा देश आपके खिलाफ है और मीडिया भी आपके खिलाफ है, तो आपको अपने सीनियर खिलाड़ियों को आगे आकर युवा खिलाड़ियों का बचाव करना होता है। मुझे पूरा विश्वास है कि विराट, रोहित शर्मा और बुमराह इसी तरह से इस दौरे पर खेलेंगे।

राफेल नडाल ने खेला अपना आखिरी मैच मुकाबले के बाद भावुक हुआ दिग्गज

नई दिल्ली(एजेंसी)। दिग्गज टेनिस खिलाड़ी राफेल नडाल ने 19 नवंबर को अपना आखिरी मुकाबला खेला। इस मुकाबले में उन्हें 80वीं रैंकिंग वाले बोटिक वान डी जैडस्चुल्प ने सीधे सेटों में 6-4,6-4 से हरा दिया।इसके बाद मैच देख रहे 10,000 दर्शकों और नडाल के परिवार ने उनका खड़े होकर अभिवादन किया। ये देख नडाल की आंखों में आंसू आ गए। डेविस कप के मुकाबले में जब राष्ट्रगान हुआ, तब भी नडाल भावुक हो गए थे।पूरी खबर पर नजर डालते हैं। इस महान टेनिस खिलाड़ी ने पिछले महीने संन्यास का ऐलान किया था। 38 साल के खिलाड़ी की गिनती दुनिया के महानतम टेनिस खिलाड़ियों में होती है।नडाल (22) से ज्यादा ग्रैंड स्लैम सिर्फ नोवाक जोकोविच (24) ही

जीत पाए हैं। नडाल को %लाल बजरी का बादशाह%भी कहा जाता है।नडाल ने अपने आखिरी मुकाबले के बाद सबका आभार दिया। उन्होंने मैच के बाद कहा, विश्व में मुझे इतना स्नेह प्राप्त हुआ। मैं खुद को बहुत सौभाग्यशाली महसूस करता हूं। नडाल ने आगे कहा, मैं पूरी स्पेनिश टीम को शुक्रिया अदा करना चाहता हूं। आप सभी ने मुझे डेविस कप खेलने का मौका दिया। मेरे करियर के कई भावनात्मक पल यहां मौजूद लोगों के साथ रहे हैं, हमने साथ मिलकर कई शानदार चीजें हासिल की हैं। कोई भी खिलाड़ी नहीं चाहता कि संन्यास ले, लेकिन शरीर की वजह से खेलना मुश्किल होता है। मैंने अपने शौक को अपने करियर में बदला। ये मेरे कल्पना से बहुत ज्यादा है।

लौटारो ने अर्जेंटीना के पांचवें शीर्ष स्कोरर के रूप में माराडोना की बराबरी की

ब्यूनस आयर्स(एजेंसी),। पेरू के खिलाफ अपने गोल की बदौलत अर्जेंटीना के इतिहास में लौटारो मार्टिनेज ने अपना नाम दर्ज करा लिया है। उन्होंने डिएगो आर्मंडो माराडोना के राष्ट्रीय टीम के साथ 32 गोल की बराबरी कर ली है। मार्टिनेज, जिनके नाम 31 गोल थे, अर्जेंटीना के इतिहास में शीर्ष स्कोरर की रैंकिंग में माराडोना (32) की बराबरी करने से एक गोल दूर थे। इस सूची में लियोनेल मेसी (112) सबसे आगे हैं। मार्टिनेज के दूसरे हाफ में वॉली से किये गए गोल ने फीफा विश्व कप क्वालीफायर में अर्जेंटीना के लिए शीर्ष स्थान को मजबूत किया, क्योंकि लियोनेल मेसी की टीम ने बुधवार (आईएसटी) को पेरू को 1-0 से

हराया। मार्टिनेज ने कहा,प्रदर्शन, गोल और खेले गए मैचों के मामले में यह एक शानदार साल रहा। हमें खेलते रहना है और दिन-ब-दिन सुधार करना है। हर कोई हमें हराना चाहता है। अर्जेंटीना की राष्ट्रीय टीम हमेशा नायक होती है।कुछ चीजें सुधारने की हैं, लेकिन हमें इसी राह पर चलते रहना है। 27 वर्षीय स्ट्राइकर ने बुधवार को 2024 का अपना 11वां अंतरराष्ट्रीय गोल किया। इसके साथ ही वह अर्जेंटीना के लिए एक कैलेंडर वर्ष में 10 गोल करने वाले केवल तीसरे व्यक्ति बन गए, उनसे पहले गैब्रियल बतिस्तुता (1998 में 12) और मेसी (2012 में 12 और 2022 में 18) ने गोल किए थे। इस जीत से अर्जेंटीना 12 मैचों में 25 अंकों के साथ तालिका में शीर्ष पर बना हुआ है, जो उरुग्वे से पांच अंक आगे है। पेरू केवल सात अंकों के साथ सबसे निचले स्थान पर है। अर्जेंटीना दक्षिण अमेरिकी क्वालीफायर (डब्ल्यू12 डी6) में पेरू के खिलाफ अपने पिछले 18 मैचों में अपराजित है। यह टूर्नामेंट के इतिहास में किसी एक टीम के खिलाफ एल्बीसेलेस्टे के लिए सबसे अच्छी अपराजित लकीर है।

स्विगी अपनी लीडरशिप नहीं रख पाया बरकरार

मुंबई(एजेंसी) । मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड (एमओएफएसएल) ने मंगलवार को कहा कि फूड डिलीवरी और क्विक कॉमर्स में इनोवेटर और कैटेगरी इन्वेंटर होने के बावजूद स्विगी अपना नेतृत्व बरकरार नहीं रख पाया। ब्रोकरेज फर्म ने कंपनी के शेयर को न्यूट्रल रेटिंग दी है। एक नोट में, प्रमुख ब्रोकरेज ने लिखा कि टाइट एक्सेक्यूशन (सख्ती से निष्पादन) और अपने प्लेटफॉर्म का बेहतर इस्तेमाल कर इन मुद्दों को ठीक किया जा सकता है। स्विगी के डाउनसाइड रिस्क का मुख्य कारण अक्षम प्रबंधन या फिर योजनाबद्ध तरीके से डार्क स्टोर्स तक पहुंच बढ़ाने में असमर्थता है। जो क्विक कॉमर्स प्रोफिटेबिलिटी, हाई यूजर रिटेंशन और अधिग्रहण लागतों को प्रभावित कर सकता है। एमओएफएसएल द्वारा बताया गया दूसरा बड़ा जोखिम स्विगी

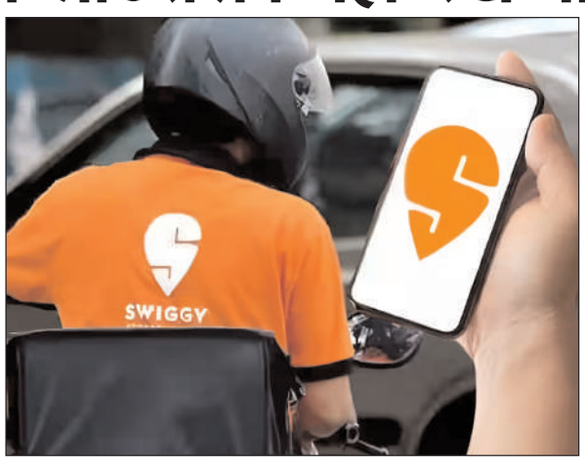

की फूड डिलीवरी और क्विक कॉमर्स बिजनेस में मार्जिन का विस्तार करने की सीमित क्षमता है, जो वैल्यूएशन री-रेटिंग में देरी का कारण बन सकता है। फूड डिलीवरी, क्विक कॉमर्स और आउट फॉर होम सेक्टर में तीव्र प्रतिस्पर्धा है, जो स्विगी की बाजार स्थिति को चुनौती देती है। ब्रोकरेज के अनुसार, स्विगी ने अपने इनोवेशन डीएनए के जरिए, फूड डिलीवरी और क्विक कॉमर्स दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, इन कैटेगरी का प्रभावी ढंग से आविष्कार किया है और इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभाई है। नोट में आगे कहा गया है, इसके बावजूद, कंपनी ने फूड डिलीवरी में अपनी बढ़त खो दी है और वर्तमान में सकल ऑर्डर मूल्य (जीओवी) वृद्धि और लाभप्रदता दोनों पर क्विक कॉमर्स में अपने प्रमुख प्रतिद्वंद्वी ब्लिंकिट से पीछे है। जबकि क्विक कॉमर्स की दौड़ अभी शुरू हो रही है, स्विगी की दोबारा रेटिंग-जीओवी वृद्धि में तेजी लाने, औसत ऑर्डर मूल्यों (एओवी) को बढ़ाने और क्विक कॉमर्स बिजनेस में निष्पादन में सुधार पर निर्भर करती है। स्विगी बनाम जोमैटो पर, एमओएफएसएल ने कहा कि जोमैटो के पास अब फूड डिलीवरी और क्विक कॉमर्स में बाजार का नेतृत्व है, जो कि प्रमुख सेक्टर बने हुए हैं। ब्रोकरेज फर्म ने आगे कहा, शहरी समृद्ध उपभोक्ता के बटुए से निकलने वाले पैसे के हिस्से को लेकर एक जंग अभी शुरू हुई है और खेल को बंद करना जल्दबाजी होगी। फूड डिलीवरी में जोमैटो ने बाजार हिस्सेदारी हासिल करना जारी रखा है, लेकिन जीओवी/एमटीयू के आधार पर, स्विगी के साथी अधिक परिपक्व और दृढ़ दिखाई देते हैं।

सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में खेलते दिखेंगे हार्दिक

नई दिल्ली(एजेंसी)। स्टार आलराउंडर हार्दिक पंड्या अपने भाई क्रुणाल पांड्या की अगुवाई में सैयद मुश्ताक़ अली ट्रॉफ़ी में बड़ौदा के लिए खेलते नज़र आएंगे, जो कि 23 नवंबर से शुरू हो रहा है। पिछले साल क्रुणाल की अगुवाई में ही बड़ौदा की टीम सैयद मुश्ताक़ अली ट्रॉफ़ी टूर्नामेंट के फ़ाइनल तक पहुंची थी, जहां उन्हें मोहाली में पंजाब से हार का सामना करना पड़ा था। हार्दिक ने पिछली बार बड़ौदा के लिए 2018-19 में मुंबई के ख़िलाफ़ एक रणजी ट्रॉफ़ी मैच खेला था, वहीं सैयद मुश्ताक़ अली ट्रॉफ़ी में वह आख़िरी बार जनवरी 2016 में खेले थे। तब हार्दिक का अंतर्राष्ट्रीय डेब्यू नहीं हुआ था। पिछले महीने ही हार्दिक को मुंबई इंडियंस द्वारा रिटेन किया गया था और वह टीम के कप्तान भी बने रहेंगे। वहीं क्रुणाल को लखनऊ सुपर जायंट्स ने रिलीज़ कर दिया था और वह आईपीएल नीलामी का हिस्सा होंगे। बड़ौदा की टीम फ़िलहाल शानदार फ़ॉर्म में है और रणजी ट्रॉफ़ी के पहले चरण में 27 अंकों के साथ वे अपने ग्रुप में शीर्ष पर हैं। सैयद मुश्ताक़ अली ट्रॉफ़ी में बड़ौदा का पहला मैच 23 नवंबर को गुजरात के ख़िलाफ़ है।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय खण्ड बेमेतरा (छ.ग.)

:: ई-प्रोक्योरमेंट द्वितीय निविदा सूचना ::

ऑनलाईन निविदाएं प्रपत्र-ए में प्रतिशत दर पर अनुबंध हेतु नीचे उल्लेखित कार्य के लिये छत्तीसगढ़ के राज्यपाल की ओर से अधोहस्ताक्षरकर्त्ता के कार्यालय में एकीकृत पंजीयन व्यवस्था में **श्रेणी-डी** एवं उच्च श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से आमंत्रित की जाती है।

कार्य का विवरण :- बेमेतरा जिले के विकासखंड **साजा एवं नवागढ़** के ग्राम कमकावाड़ा, बोरिया, कंदई (एन) एवं खाम्ही में **जल जीवन मिशन** अंतर्गत एकल ग्राम नलजल योजनाओं के अंतर्गत **UPVC pipe 6kg/10kg** पाईप लाईन जोड़ने, स्वीच रूम, उच्चस्तरीय जलागार निर्माण, सबमर्सिबल पंप, बाउण्ड्रीवॉल, क्लोरीनेटर सिस्टम, क्लोरीनेटर रूम, इलेक्ट्रीसिटी कनेक्शन, घरेलू नल कनेक्शन इत्यादि दिये गये शेड्यूल के अनुसार।

स. क्र.	सिस्टम नम्बर	निविदा सू.क्र.	ग्राम का नाम	अनुमानित लागत (रू.लाख मे)
1	161356	39	कमकावाड़ा एकल ग्राम नलजल योजना **(Risk & Cost)**	**43.40**
2	161358	40	बोरिया एकल ग्राम नलजल योजना	**51.76**
3	161361	41	कंदई (एन) एकल ग्राम नलजल योजना	**58.73**
4	161385	42	खाम्ही एकल ग्राम नलजल योजना	**95.66**

1. **बिड प्रारंभ की तिथि** – **21.11.2024**
2. **बिड सबमिशन की अंतिम तिथि** – **27.11.2024**

उपरोक्त कार्यो की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल **http://eproc.cgstate.gov.in** में दिनांक **21.11.2024** से देखे जा सकते है।

कार्यपालन अभियंता
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड
बेमेतरा (छ.ग.)

G-242503910/2

कार्यालय, कार्यपालन अभियंता, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, संभाग कवर्धा जिला - कबीरधाम (छ. ग.)

मैनुअल पद्धति निविदा सूचना क्र 07 (प्रथम आमंत्रण)

क्रमांक /2745/ निविदा /ग्रा.यां. सेवा /2024 कबीरधाम दिनांक 19/11/2024

छत्तीसगढ़ राज्य के राज्यपाल के ओर से केवल एकीकृत पंजीयन प्रणाली के अर्न्तगत पंजीकृत "द" श्रेणी एवं उच्च वर्ग ठेकेदारों से निम्न दर्शित कार्य हेतु मैनुअल निविदा दिनांक 06.12.2024 तक आमंत्रित की जाती है। :-

क्र.	कार्य का विवरण	प्रत्येक कार्य की अनुमानित लागत (रू. लाख में)
1	2	3
1	मिनी स्टेडियम निर्माण भाग 01 हेतु वि.ख. कवर्धा अंतर्गत - ग्राम घुघरीकला, अमलीडीह, वि.ख. स. लोहारा अंतर्गत - ग्राम पवनतरा, सिंघनपुरी जंगल, वि.ख. बोडला अंतर्गत - ग्राम तितरी, भोंदा, कांपा, कामाडबरी, नेउरगांवखुर्द	27.20

उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी विभागीय वेबसाईट **https://res.cg.gov.in** में अथवा कार्यालयीन अवधि में कार्यालय में उपस्थिति होकर दिनांक 21.11.2024 से देखी जा सकती है।

कार्यपालन अभियंता,
ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, संभाग कवर्धा
जिला कबीरधाम (छ.ग.)

G-242503917/1

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शुक्रवार 22 नवम्बर 2024

एकलव्य आदर्श विद्यालय के राष्ट्रीय खेलों का मेजबानी करेगा छत्तीसगढ़

रायपुर (आरएनएस)। एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय राष्ट्रीय खेलों के आयोजन के मेजबानी इस बार छत्तीसगढ़ को मिली है। यह खेल प्रतियोगिता 14 से 20 दिसंबर तक आयोजित की जाएगी। खेल प्रतियोगिता में 15 एकल एवं युगल तथा 7 सामूहिक खेल इस तरह कुल 22 खेलों का आयोजन किया जाएगा। आदिम जाति विकास विभाग के प्रमुख सचिव श्री सोनमणि बोरा ने आज नवा रायपुर स्थित आदिवासी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के सभाकक्ष में को-ऑर्डिनेशन कमेटी की बैठक लेकर तैयारियों की समीक्षा की।

संक्षिप्त समाचार

ऑपरेशन नन्हेफरिस्ते-01 : अकेली घूमती बालिका को सीएसएम कार्यालय के सुपुर्द किया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। रेसुब पोस्ट दुर्ग- दिनांक 20.11.2024 को समय लगभग 7 बजे रेसुब दुर्ग की सउनि कुसुम वर्मा व म.आ. मीनाक्षी निषाद को प्लेटफार्म न. 02/03 में गस्त के दौरान एक बालिका उम्र लगभग 09 वर्ष अकेले घूमते हुये नजर आयी। उक्त बालिका से नाम व पता पूछने पर उसने अपना नाम राखी तथा मम्मी का नाम शांति बताया तथा पिता का नाम नही बता पा रही थी तथा वह दुर्ग कैसे आई यह भी नहीं बता पा रही थी। पश्चात उक्त बालिका को सीएसएम/दुर्ग के पास अग्रिम कार्यवाही हेतु ले जाया गया। सीएसएम दुर्ग के द्वारा सूचना के अनुसार चाइल्ड लाइन महिला एवं बाल विकास विभाग दुर्ग, जिला-दुर्ग (छ.ग.) की सदस्य श्रीमती भारती अपने कर्मचारियों के साथ सीएसएम के कार्यालय में उपस्थित होने पर उक्त बालिका को अग्रिम उचित कार्यवाही हेतु सुपुर्द किया गया।

छत्तीसगढ़ के जनजातीय जीवन शैलियों पर निर्माणाधीन म्यूजियम अंतिम चरण में

रायपुर (आरएनएस)। आदिम जाति विकास विभाग के प्रमुख सचिव श्री सोनमणि बोरा ने आज शाम नवा रायपुर स्थित आदिवासी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान परिसर में आदिम जनजातियों की जीवन शैलियों पर तैयार हो रहे म्यूजियम का निरीक्षण किया। उन्होंने विभागीय अधिकारियों और वेंडरों को गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय-सीमा में कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। गौरतलब है कि शहीद वीर नारायण सिंह आदिवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय के पास ही ट्रायबल म्यूजियम का निर्माणकार्य भी अंतिम चरण में है।

अनिल साहनी का निधन, अंतिम संस्कार आज

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री एमएल साहनी एवं कांता साहनी के पुत्र श्री अनिल साहनी जी (भूतपूर्व जीएसटी अधिकारी) का आज दिनांक 21-11-2024 को प्रात: निधन हो गया है। अंतिम संस्कार कल दिनांक 22 नवंबर 2024 को प्रात: 11 बजे न्यू राजेंद्र नगर मुक्तिधाम में रखा गया है। उठवाने का कार्यक्रम दिनांक 23-11-2024 को गुरुद्वारा साहेब, श्याम नगर में संध्या 3:00 से 4:00 बजे रखा गया है। आइये दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें। शोकाकुल- श्रीमती रोमा सहनी (धर्मपत्नी), ई-9, मारुति रेजीडेंसी, अमलीडीह, रायपुर 492001, हिमांशी - सुबोजीत (बेटी दामाद), मेघना-अमोल (बेटी दामाद), मो. नं.- 9131155400.

सहकारिता मंत्री केदार कश्यप ने मंत्रालय में ली विभागीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक

बैठक के तुरंत बाद मंत्री कश्यप ने अधिकारियों को लेकर केंद्री धान खरीदी का किया औचक निरीक्षण

रायपुर (विश्व परिवार)। आज 21 नवंबर 2024 को सहकारिता मंत्री श्री केदार कश्यप द्वारा मंत्रालय नवा रायपुर में अंतर्विभागीय समीक्षा बैठक ली। इस बैठक में सहकारिता, मछली पालन, पशुपालन, वनोपज विभाग के अधिकारीगण की उपस्थित रहे। बैठक में धान खरीदी एवं केंद्रीय सहकारिता तथा राज्य के महत्वाकांक्षी योजनाऐं सहकार से समृद्धि पर किए गए कार्यवाही की समीक्षा किया गया।

मंत्रालय में समीक्षा बैठक में सहकारिता मंत्री श्री केदार कश्यप ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के पहल पर किसानों को राशि आहरण में सुविधा हो, लिए इसके समितियों में 2058 माइक्रो एटीएम लगाया गया है। इस माइक्रो एटीएम से किसान 10000 रुपए तक की राशि निकाल सकते है। पैक्स सोसाइटियों में किसानों द्वारा माइक्रो एटीएम की समितिवार ट्रांजेक्शन तथा ग्रेडिंग किए जाने का निर्देश दिया गया। समीक्षा में पाया गया कि सहकारी क्षेत्र में विश्व में सबसे बड़ी अनाज भंडारण योजना के तहत छत्तीसगढ़ में 617 गोदाम का निर्माण पूर्ण किया जा चुका है। छत्तीसगढ़ में 9 पैक्स सोसाइटियों में प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र का संचालन किया जा चुका है। छत्तीसगढ़ में पैक्स के 1965 कामन सर्विस सेंटर पंजीकृत किया गया है। कामन सर्विस सेंटर द्वारा अब तक 01करोड़ से अधिक का ट्रांजेक्शन किया जा चुका है। बैठक में मंत्री महोदय द्वारा एनसीसीएफ पोर्टल में राज्य के सभी पैक्स का पंजीयन करने वाला छत्तीसगढ़ राज्य बनने पर सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को बधाई दिए। बैठक में छत्तीसगढ़ में चार नवीन जिला सहकारी केंद्रीय बैंक स्थापना की प्रगति की समीक्षा की गई है। समीक्षा में पाया गया कि मंत्री महोदय ने बैठक में कहा कि छत्तीसगढ़ में धान खरीदी का महाअभियान 14 नवम्बर से शुरू हो गया है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की पहल पर छत्तीसगढ़ के 27.68 लाख पंजीकृत किसानों से धान की खरीदी की जा रही है। राज्य सरकार द्वारा 2739 उपार्जन केंद्रों बनाए गए है। किसानों से 14 नवम्बर से अब तक चार दिन में 4.18 लाख मीट्रिक टन से अधिक धान की खरीदी हुई है। अब तक 90000 किसानों को

621 करोड़ का भुगतान किया जा चुका है। आज दिनांक 21.11.2024 के लिए 20829 टोकन जारी किया गया है, जिसमें लगभग 1.02 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी हेतु जारी किए गए। पैक्स समितियों द्वारा 10 हजार से अधिक रुपे क्रेडिट कार्ड का वितरण किया गया है एवं शेष सभी किसानों को रुपे कार्ड वितरण के लिए आगामी 03 माह में विशेष कैंप लगाने का निर्देश दिया गया। धान खरीदी की समीक्षा करते हुए मंत्री श्री कश्यप ने कहा कि उपार्जन केंद्रों में किसानों के लिए बैठने, पानी तथा बरदाना आदि की व्यवस्था बनी रहनी चाहिए। किसानों को धान विक्रय करने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। किसानों को धान खरीदी केंद्रों में माइक्रो एटीएम से भुगतान की व्यवस्था सुनिश्चित किया जावे। पैक्स कम्प्यूटराजेशन योजनांतर्गत सभी समिति गो- लाईव स्टेज पर पहुंच गई है। इस पर मंत्री महोदय द्वारा सभी को बधाई दिया गया।

बैठक उपरांत ही सहकारिता मंत्री श्री केदार कश्यप ने बैठक में मौजूद अधिकारियों को लेकर केंद्री उपार्जन केंद्र का औचक निरीक्षण करने पहुंचे। मंत्री श्री कश्यप द्वारा धान बेचने आए किसानों से व्यवस्थाओं व सुविधाओं के संबंध में जानकारी ली। मंत्री द्वारा इलेक्ट्रॉनिक तौल, नमी मापक यंत्र एवं बायोमेट्रिक का निरीक्षण किया गया।केंद्री उपार्जन केंद्र में आए किसान श्री योगेश्वर, श्री झालीराम, श्री जगदीश, श्री ओंकार साहू, श्री रितेश द्वारा मंत्री महोदय के समक्ष माइक्रो एटीएम से राशि निकला गया। माइक्रो एटीएम की इस व्यवस्था से किसानो को काफी सुविधा मिली है। इस अवसर पर मंत्री महोदय द्वारा केंद्री के किसान श्री लक्ष्मीनाथ साहू, श्री बिसहत, श्री गोपेश्वर साहू को रुपे केसीसी कार्ड वितरित किया गया। केंद्री उपार्जन केंद्र में अब तक 166 किसानों से 6159 क्विंटल धान की खरीदी हुई है।

ट्रैक पर उतरने को तैयार है गोल्डन चैरियट लग्जरी ट्रेन, 7 स्टार होटल की सारी खूबियों से है लैस

7 स्टार होटल से कम नहीं है ये गोल्डन चैरियट लग्जरी ट्रेन, जानिए कब उतरेगी ट्रैक पर

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। भारतीय रेलवे और IRCTC की लग्जरी ट्रेनों में से एक गोल्डन चैरियट लग्जरी ट्रेन एकबार फिर ट्रैक पर उतरने को तैयार है। कर्नाटक की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाने वाली Golden Chariot Lu&ury Tourist Train इस बार 14 दिसंबर को रवाना हो रही है। ट्रेन में 13 डबल बेड केबिन, 26 ट्विन बेड केबिन और दिव्यांग मेहमानों के लिए 1 केबिन है। 40 केबिन वाले इस शाही ट्रेन में 80 यात्री सफर कर सकते हैं।

इस ट्रेन का नाम गोल्डन चैरियट है जिसका मतलब होता है स्वर्ण रथ। यात्रियों को शाही फील देने के लिए ट्रेन के सभी आलीशान केबिन एयर कंडीशनर और वाई-फाई से लैस हैं। सभी केबिन में गद्देदार फर्नीचर, लग्जरियस बाथरूम, आरामदायक बेड, शानदार टीवी जिसमें कई ओटीटी के मजे लिए जा सकते हैं। ट्रेन में सैलून का भी खास इंतजाम है।

गोल्डन चैरियट लग्जरी ट्रेन में देशी और विदेशी व्यंजनों का विशेष प्रबंध किया गया है। जिसके लिए रुचि और नालापक नाम के दो बेहतरीन रेस्तरां हैं।

यात्रियों की सेहत और आरामदायक सफर के लिए इस गोल्डन चैरियट ट्रेन में आरोग्य स्पा भी हैं, जहां स्पा थेरेपी समेत कई स्पा का आनंद लिया जा सकता है। यही नहीं सेहत का ख्याल रखने के लिए एक हाइटेक जिम भी है जहां वर्कआउट के लिए बेहद आधुनिक एक्सरसाइज मशीने हैं। मेहमानों को बेहतर सुरक्षा प्रदान करने के लिए पूरी ट्रेन सीसीटीवी कैमरे और फायर अलार्म सिस्टम से लैस है। पूरी ट्रेन किसी 7 स्टार होटल से कम नहीं है।

लग्जरी ट्रेन 5 रातें और 6 दिन गुजारने के लिए आपको मात्र 4,00,530 और 5 प्रतिशत GST देना होगा। जिसमें रहना, खाना, प्रवेश टिकट, गाइड आदि शामिल है। अधिक जानकारी के लिए www.goldenchariot.org वेबसाइट पर विजिट करें या फिर goldenchariot@irctc.com पर अपने सवाल भेजें। साथ ही +91 8585931021 पर भी संपर्क किया जा सकता है।

2024-25 के लिए रुट

कर्नाटक का गौरव (5 रातें/6 दिन)- बेंगलुरु से शुरू होकर बांदीपुर, मैसूर, हलेबिदु, चिकमंगलूर, हम्पी, गोवा और वापस बेंगलुरु। दक्षिण के रत्न (5 रातें/6 दिन)- बेंगलुरु से शुरू होकर मैसूर, कांचीपुरम, महाबलीपुरम, तंजावुर, चेट्टीनाड, कोचीन, चेरतला और वापस बेंगलुरु। 14 दिसंबर, 2024- कर्नाटक का गौरव (5 रातें/6 दिन)। 21 दिसंबर, 2024- दक्षिण के रत्न (5 रातें/6 दिन)। 4 जनवरी, 2025- कर्नाटक का गौरव (5 रातें/6 दिन)। 11 फरवरी, 2025 -कर्नाटक का गौरव (5 रातें/6 दिन)। 15 फरवरी, 2025-दक्षिण के रत्न (5 रातें/6 दिन)। 1 मार्च, 2025- कर्नाटक का गौरव (5 रातें/6 दिन)।

मुख्यमंत्री साय ने सपरिवार देखी 'द साबरमती रिपोर्ट' फिल्म

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या देवी साय तथा तथा फिल्म के डायरेक्टर सुश्री एकता कपूर और फिल्म की नायिका सुश्री रिद्धि डोगरा के साथ 'द साबरमती रिपोर्ट' फिल्म देखने राजधानी के मैग्नेटो मॉल पहुंचे। इस फिल्म में 22 साल पहले गुजरात के गोधरा में हुए ट्रेन हादसे की कहानी की सच्चाई को दिखाने की कोशिश की गई है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा है कि 'द साबरमती रिपोर्ट' फिल्म इसलिए भी देखी जानी चाहिए क्योंकि अतीत का अध्ययन ही हमें वर्तमान और भविष्य के बारे में बेहतर मार्गदर्शन दे सकता है। उन्होंने कहा है कि यह फिल्म इतिहास के उस भयावह सत्य को उजागर करने का अत्यंत सराहनीय और प्रभावशाली प्रयास है जिसे निहित स्वार्थ के लिए छुपाने का प्रयास किया गया था। यह फिल्म तात्कालिक सिस्टम की उस सच्चाई को उजागर करती है, जो झूठे नरेटिव फैलाकर सत्य को दबाने का निंदित प्रयास करती थी। फिल्म दर्दनाक घटना को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती है।

कलिंगा विश्वविद्यालय में इंटर-कॉलेज क्विज प्रतियोगिता -ब्रेन ब्राल का भव्य आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर में आयोजित ब्रेन ब्रॉल इंटर-कॉलेज क्विज प्रतियोगिता में विभिन्न कॉलेजों से प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत सुश्री हर्षा शर्मा, सहायक प्रोफेसर- शिक्षा संकाय द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से हुई, जिन्होंने पूरे आत्मविश्वास और ऊर्जा के साथ कार्यक्रम का संचालन भी किया।

श्री गुलसन कुमार बेहरा, सहायक प्रोफेसर- शिक्षा संकाय ने खेल के नियमों को स्पष्ट रूप से समझाया, जिससे प्रतियोगिता में निष्पक्षता और प्रतियोगी भावना बनी रही। प्रतियोगिता के स्कोरिंग कार्य को डॉ. सरोज नैयर, सहायक प्रोफेसर- शिक्षा संकाय द्वारा कुशलता और पारदर्शिता के साथ संभाला गया। विभिन्न कॉलेजों के प्रतिभागियों के बीच हुई इस प्रतिस्पर्धा में कई रोमांचक राउंड्स के बाद, कलिंगा विश्वविद्यालय की टीम, जिसमें मनराखन लाल टंडन, कुसुम सिन्हा, और नेहा पटेल शामिल थे, ने विजेता का खिताब अपने नाम किया। शासकीय शिक्षा महाविद्यालय रायपुर की टीम, जिसमें संगीता, आकाश वैष्णव, और शशिभूषण पटेल शामिल थे, ने प्रथम उपविजेता का स्थान हासिल किया तथा द्वितीय उपविजेता टीम शासकीय शिक्षा महाविद्यालय रायपुर के ललित कुमार, अजय कुमार, और राकेश कुमार ने अपने ज्ञान और टीम वर्क से दर्शकों को प्रभावित किया।

कार्यक्रम में डॉ. श्रद्धा वर्मा, अधिष्ठाता-शिक्षा संकाय, डॉ. डी. कालिदास, स्पोर्ट्स डायरेक्टर और न्यायाधीश एवं विशेष अतिथि डॉ. ए. विजय आनंद, कुलानुशासक- कलिंगा विश्वविद्यालय की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की। डॉ. श्रद्धा वर्मा ने प्रतिभागियों को प्रोत्साहित और सम्मानित किया। शिक्षा संकाय से श्रीमती नीतू सिंह, सुश्री अनामिका, और श्री प्रीतम कुमार पटेल ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम का समापन डॉ. लुभावनी त्रिपाठी, सहायक प्रोफेसर-शिक्षा संकाय द्वारा दिए गए धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ हुआ, जिसने इस आयोजन को सफलतापूर्वक संपन्न किया।

रायपुर नगर दक्षिण उपनिर्वाचन के लिए मतगणना 23 नवंबर को

शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज सेजबहार में मतगणना सुबह 8 बजे से होगी प्रारंभ

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर नगर दक्षिण उपनिर्वाचन के लिए मतगणना 23 नवंबर को सेजबहार स्थित गवर्मेंट इंजीनियरिंग कॉलेज में होगी। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्रीमती रीना बाबासाहेब कंगाले ने जानकारी दी कि विधानसभा क्षेत्र 51- रायपुर नगर दक्षिण के उपनिर्वाचन की मतगणना तिथि 23 नवंबर दिन शनिवार को नियत है। मतगणना तिथि को मतगणना कार्य गवर्मेंट इंजीनीयरिंग कॉलेज, सेजबहार, रायपुर (ब्लॉक-ई) में सम्पन्न किया जाएगा। निर्वाचन के लिए 2 सहायक रिटर्निंग अधिकारियों की नियुक्ति की गई है। इसके अतिरिक्त मतगणना के लिए 4 अतिरिक्त सहायक रिटर्निंग अधिकारियों की नियुक्ति की गई है। उन्होंने कहा कि मतगणना का कार्य मतगणना तिथि के दिन प्रात: 8 बजे से प्रारम्भ होगा, जिसमें प्रात: 8 बजे से पोस्टल बैलेट की गणना होगी। पोस्टल बैलेट की गणना प्रारम्भ होने के पश्चात् प्रात: 8.30 बजे से ईव्हीएम मशीनों के मतों की गणना प्रारम्भ होगी।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्रीमती कंगाले ने बताया कि मतगणना हॉल में ईव्हीएम में पड़े मतों की गिनती के लिए 14 टेबल लगाए गए हैं। यह गणना कुल 19 राउण्ड में पूरी होगी। पोस्टल बैलेट की गणना के लिए 1 अतिरिक्त टेबल की व्यवस्था की गई है। मतगणना हॉल के प्रत्येक टेबल में एक-एक काउंटिंग सुपरवाईज़र, काउंटिंग असिस्टेंट एवं माइक्रो आब्जर्वर होंगे, जो मतगणना का कार्य संपादित करेंगे। मतगणना हॉल में ही रिटर्निंग ऑफिसर द्वारा मतगणना की जानकारी को संधारित करने के लिए डाटा कम्पाइलेशन एवं अपलोडिंग सेक्शन बनाया गया है। मतगणना हॉल में अभ्यर्थी या अभ्यर्थियों के मतगणना एजेन्ट्स भी उपस्थित रह सकेंगे, जो मतगणना हॉल में किए गए फेंस से बाहर लगी हुई कुर्सियों में बैठकर मतगणना कार्य का अवलोकन कर सकेंगे।

गुवाहाटी में अखिल भारतीय विद्युत महिला खेल स्पर्धा में छत्तीसगढ़ को 8 पदक

मुख्यमंत्री साय, कंपनी अध्यक्ष डॉ. रोहित यादव ने दी बधाई

रायपुर (विश्व परिवार)। 46वीं अखिल भारतीय विद्युत महिला स्पर्धा में छत्तीसगढ़ महिला टीम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर टीम इवेंट में टेबल टेनिस व शतरंज में रजत, बैडमिंटन में कांस्य व व्यक्तिगत स्पर्धाओं को मिलाकर 8 पदक हासिल करने में कामयाब रही। समापन समारोह में असम की ऊर्जा एवं खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्रीमती नंदिता गोर्लोसा ने विजयी खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री तथा ऊर्जा मंत्री श्री विष्णुदेव साय, पॉवर कंपनी अध्यक्ष व ऊर्जा सचिव डॉ. रोहित यादव ने छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज के दल को बधाई देते हुए कहा है कि इनके उम्दा प्रदर्शन से छत्तीसगढ़ का नाम रोशन हुआ है। प्रदेश की खेल प्रतिभाओं को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी क्षमताओं का झण्डा गाड़ने के लिए इसी प्रकार लगन और निष्ठा से अभ्यास करते रहना चाहिए।

गुवाहाटी असम में 17-20 नवंबर तक आयोजित इस टूर्नामेंट में छत्तीसगढ़ की टीम ने अलग-अलग श्रेणी में पदकों पर अपना कब्जा जमाया। टीम की मैनेजर श्रीमती अनामिका मण्डावी ने बताया कि टेबल टेनिस स्पर्धा में टीम इवेंट में (दिव्या आमदे, श्रद्धा वर्मा, शिखा खाण्डे, शोभना सिंह) द्वारा रजत पदक हासिल किया गया, सिंगल्स में दिव्या आमदे द्वारा स्वर्ण एवं डबल्स में श्रद्धा व दिव्या की जुगलबंदी को रजत पदक प्राप्त हुआ। इसी तरह बैडमिंटन में (संध्या रानी, जुवेना गोम्स, वीरांगना भगत, श्रद्धा पिल्लई) द्वारा टीम इवेंट में कांस्य पदक प्राप्त हुआ, सिंगल्स में संध्या रानी ने कांस्य पदक पर कब्जा जमाया। शतरंज स्पर्धा में टीम इवेंट में नूतन ठाकुर, मीना कुर्रे, सानिली चौहान, भारती फेराओ ने रजत पदक दिलाया, प्रथम बोर्ड प्राइस में नूतन ठाकुर, चौथी बोर्ड प्राइस भारती फेराओ को मिला। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनी की महिला खिलाड़ियों ने पांच स्पर्धाओं (टेबल टेनिस, बैडमिंटन, शतरंज, कैरम, टेनिकोइट) के लिए राष्ट्रीय स्तर के 8 स्टेट टीमों से मुकाबला कर तीन स्पर्धा में कुल 8 पदक प्राप्त किये। छत्तीसगढ़ महिला खिलाड़ियों को टीम मैनेजर श्रीमती अनामिका मांडवी, कोच श्री सागर पिंपलापुरे के द्वारा पूरे टूर्नामेंट मे मार्गदर्शन मिलता रहा। इस अवसर पर ऑल इंडिया इलेक्ट्रिसिटी स्पोर्ट्स कंट्रोल बोर्ड के प्रेसिडेंट श्री सुरेश कैमल, महासचिव श्री के. शिव कुमार, वरिष्ठ खेल अधिकारी श्री टी.कुमार वेदुवालु, खेल अधिकारी श्री एम.एस. नायडू, उप. महा. प्रबंधक वित्तीय श्रीमती पूर्वी नाथ उपस्थित थे।

शासन के लिए जनभागीदारी जरूरी, गुड गवर्नेंस की रीजनल कॉन्फ्रेंस में बेस्ट प्रेक्टिसेस पर हुई चर्चा

रायपुर में चल रही है 'गुड गवर्नेंस' पर दो दिवसीय रीजनल कॉन्फ्रेंस

देश के विभिन्न राज्यों के 150 प्रतिनिधि ले रहे भाग

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत सरकार एवं छत्तीसगढ़ सरकार के संयुक्त तत्वाधान में नवा रायपुर में ''गुड गवर्नेंस'' पर दो दिवसीय क्षेत्रीय सम्मेलन आज से शुरू हुआ। इस सम्मेलन में गुड गवर्नेंस की बेस्ट प्रेक्टिसेस, नागरिक सशक्तिकरण, शासन-प्रशासन के कामकाज और नागरिक सेवाओं की आम जनता तक पहुंच को आसान बनाने के लिए विभिन्न ई-प्लेटफार्म के उपयोग आदि से संबंधित विषयों पर हुए विचार-विमर्श के दौरान वक्ताओं ने कहा कि सुशासन के लिए जनभागीदारी जरूरी है। इसके जरिए कठिन से कठिन चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है। इस सम्मेलन में देश के विभिन्न राज्यो से आए 150 प्रतिनिधि सहित छत्तीसगढ़ राज्य के वरिष्ठ आईएएस अधिकारी भाग ले रहे हैं।

सम्मेलन के पहले दिन के दूसरे सत्र में ''जिला प्रशासन में महिला नेतृत्व'' विषय पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता छत्तीसगढ़ शासन की अपर मुख्य सचिव श्रीमती ऋचा शर्मा ने की। इस सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले की कलेक्टर श्रीमती मोनिका रानी एवं लखीमपुरी-खीरी की कलेक्टर श्रीमती दुर्गा शक्ति नागपाल और छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले की कलेक्टर श्रीमती नम्रता गांधी ने सत्र को सम्बोधित किया। कलेक्टर श्रीमती मोनिका रानी ने सेवा से संतृप्तिकरण अभियान के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि हमें फील्ड में जाकर जनता से मिलकर शासकीय सेवाओं की सहजता से आम जनता तक पहुंच सुनिश्चित करना चाहिए। कलेक्टर श्रीमती दुर्गा शक्ति नागपाल ने कहा कि स्वस्थ समाज के निर्माण महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि वे मल्टीटास्कर, प्राकृतिक रूप से देखभाल करने वाली और संवेदनशील होती हैं। उन्होंने आगे कहा कि जिला प्रशासन के मार्गदर्शन में महिलाओं के समूह केले की खेती और सह-उत्पाद निर्माण और ई-कॉमर्स से अपने उत्पाद का विक्रय कर रहा है। महिला समूहों के इस कार्य की प्रशंसा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने की है।

कालड़ा बर्न एवं प्लास्टिक कॉस्मेटिक सर्जरी सेंटर

पलकों का न खुलना
टोसिस PTOSIS का ईलाज
आर.के.सी.के सामने, चौबे कालोनी एवं पचपेढ़ी नाका, धमतरी रोड, कलर्स मॉल के पास, रायपुर
कॉल : 9827143060/8871003060
Ajay Advt.

लोन लेने के लिए ITR बनवायें मात्र 500/- में
शेखर गुप्ता ONLYTDS.COM
ITR GST
हमारे TAX Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।
G.S.T. रिटर्न Food Licence
इन्कम TAX फाईल M.S.M.E. रजिस्ट्रेशन
TDS रिफंड प्रोजेक्ट रिपोर्ट
IT नोटिस डिजिटल सिग्नेचर
9300755544, 8878655544

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354